



सो०। बन्दिजोरियुगपानि, गरानायक करुणाश्रयन ॥

होतबिम्ब सब हानि, लेत नाम शंकर सुवन ॥

बक्रतुराड भुज चार, बुद्धिपुञ्ज मङ्गल सदन ॥

लोचन शुभ रत्न नार, बिम्ब राज कारि कर बदन ॥

नीलाम्बुजतन श्याम, कञ्जारुणा लोचन सुखद ॥

समहिय करविश्राम, पथ निधि बासी करकुमुद ॥

निगमन पावत पार, शारदादि कहिगुणा विशद ॥

इव भञ्जन सहि भार, प्रभु करुणा कर शुभगुणाद ॥

बन्दौ भव अभिशाम, भव्य नाच भवभयहरण ॥

होत सफल मनकाम, जासु नाम भजिभवतरण ॥

बन्दौ गुरुपदरेणु, शुचि भेषजु भवस्तजशमन ॥

मञ्जु मनोपथ फेरणु, नेत्राञ्जन शुभ दृष्टि घन ॥

बन्दौ सन्न सुजान, पद सरोज रज शशि धरि ॥

अनु दिन श्रीपति ध्यान, जिन भजि हरि निज वष्य करि ॥

बन्दौ बायु कुमार, हरत शोक लिय नाम के ॥

सुद मङ्गल आगार, प्रियतम नितसिध रामके ॥

श्लो० । राम नाम कलिमलहरणा, हरणा दोष सुरख रास ।  
 लालमनी मन कर्मबच, निज उर कर विश्वास ॥१॥  
 श्लो० । जिनके मन विश्वास, ते हरि पद नित ध्यावहीं ।  
 ह्वइ निकामतनि आस, स्वइ बाञ्छितगति पावहीं ॥२॥



बन्नें गरापति पद जल जाता । उमातनयतिव सुत सुरख दाता  
 सुर अनादि जानत सब कोई । प्रथम तासु जग पूजन होई  
 दीनदयालु बिबुध हितकारी । असुरन काल लालत्रिपुरादि  
 आठ सिद्धि नव निधिके रानी । संफट हरणा शरणा सुरख स्वानि  
 गराप समान कौन जग स्वामी । सुरमुनि मनुज जासु अनुपा नी  
 लुनो ताथ जोबर अलिपावन । सुरविरञ्चि नारद मन भावन  
 जन रञ्जन सत्तन सुरख दाई । जाहि भजत सुरमुनि समुदाई

सो दयालु बर सांगे दीजे - । उमासुवनजगयशकरलीजे  
 सियाराम पद पङ्कज नेह । उपजे नित याबर मोहिं देहू  
 दो० । देहू हर्षि बरदान यह, बिनय करौं कर जोर ।

सियबर चररा सरोजसज, बाहे प्रीति न घोर ॥

सो० । बिनय करौं धार नाथ, जाते होइ सो मोरहित ।

करिये सोइ सहाय, धरौं ध्यानसियाराम पद ॥

श्री गुरु चररा सरोजनभासी । सुभिरत सुलभभक्ति अभिरामि  
 विनुगुरु कृपाभक्ति हरिचहई । तेनर मूढ मन्दमति अहई  
 जो परसत गुरु होयें दयाला । सो पायै हरि भक्ति विशाला  
 ताते नाथ बिनय यह मोरी । मन आम वचन शररा प्रभुते  
 तुम स्वामी मैं सेवक तोरा । औगुरासकल क्षमइ प्रभु नोरा  
 करौं नाथ मैं एक ढिठाई । हरि प्रेरित जो मम उर आई  
 अजर अमर सुखसिन्धुबिहारी । जाकर ध्यान धरत मद नारी  
 शुकसनकादिसिद्ध मुनिनारद । सहसानन चतुरानन शारद  
 रहत सदा चरराव अनुरागी । सोइबर नाथ देहू मोहिं मांगी  
 दो० । हाथ जोरि बर सांगहूँ, दीजे परम उदार - ।

जन्म जन्म सियाराम पद, बाहे प्रेम अपार - ॥

सो० । जापर तुम अनुकूल, राम भक्ति सोइ पावहीं ।

सुकृत सुखलमूल, जेनर नित हरि ध्यावहीं ॥

वन्दौ उमा प्राणा पति चरणा । संशय शोक मोह भ्रम हरणा  
 मुद मङ्गल मूरति शिवशंकर । शमन दोष रिपु कालभयंकर  
 नाम विदित जग औघड़दानी । उमा शक्ति जोहिं वेद दरवानी  
 करौं प्रणाम धरति धरिनाथा । सब भावत बर सांगौं नाथा

सुर विरञ्चि नारद स्तनकादी । कवि कोविद परमारधवादी  
 काकभुसुराङ्गरुड जेहि भौंती । धरत ध्यान जाकर दिन राती  
 तुमहूं जाकर ध्यान धरेहू । सोइ बर सुलभ उमा बर देहू  
 हरिपद पङ्कज प्रीति अपारा । देव दया करि देव उदारा  
 होयें मनोरथ पूरणा मोरे । केवल नाथ अतुग्रह तारे  
 दो० । यद्यपि अधम मलायतन, तदपि कहौं करजोर ।

समज सकल अपराध सम, हेरि आपनी श्रीर ॥

सो० । सुनिये शब्द सुजान, बिनै मोरि कतरा यतन ।

सीजे यह बरदान, हरिपद भजि भवनिधि तरौं ॥

घनै शिर धरि रज पद गङ्गा । जेहि मज्जन होयै अघ भंगा  
 महिमा अस्मिन् विदित तिङ्ग लोका । मज्जन पान हरति सब शोका  
 जे रज शिर धरि ध्यान लगायै । बिलु प्रयास सुर धाम सिधायै  
 है प्रताप जग गङ्गा माई । कीरति कलित चहूँ दिशि झाई  
 गङ्गा बज्जत यतित तुम तारे । तारे जिते गगन नहिं तारे  
 भागीरथ सम को परभारथ । जिन निज हेतु कीन जग त्याख  
 मातु एक मन है अभिलाखा । कहौं सो प्रकट शुभ नहिं राखा  
 जेहि खोजत सुर फिरें भुवाना । उमा समेत धरें हर ध्याना  
 सोइ ध्यान धरि हरिपद ध्याऊं । मातु सो यह बर मांगे पाऊं  
 दो० । महिमा अस्मित देव सरि, अथम उधारण हारि ।

पावन सुयश सुसुक्ति हित, कही कविन विस्तारि ॥

सो० । दिन दिन यह अतुराग, पद पङ्कज सिय समके ।

कपट लोभ मद त्याग, भजौ निरन्तर ध्यान धरि ॥

बन्दौ मन क्रम वचन त्रिवेनी । आरति हरि रीत सकल सुरवेदीनी

दीरघ अचल मनोहर धामा । दृष्टि परत पूजत गत कामा  
 ताके निपाट बसत मुनि हुन्दा । सहत चारिफल करत अनन्दा  
 करे विबुध तहं जय नय योगा । पावै मन बाञ्छित सुरय भोगा  
 पररिः अक्षय बढ बेती भाधव । होय सनाथ सिद्ध मुनि साधव  
 मञ्जन यक्षुन सरस्वति गङ्गा । जाते होय दिव्य मन अङ्गा  
 भरहात मुनि दर पर लागी । होय विमल मति बूढ़ अभागी  
 कैरघराम प्रयाग बडाई । शेष रहस सुरय सकै न गाई  
 लालमनी किमि कहै धरानी । अित बुधि मोरि चकित भ्रम सानी

दो० । तति सुधिरसा शरणा तुव, बिनय करौ कर जोर ।

देइ रामपद प्रीति वर, जेहि विधि सप हित मोर ॥

जो० । चहौ कनि कुल त्याग, देइ भीरव सौं भोहौं ।

जेहि विधि बढ अनुराग, जम्भ जम्भ सिध रामपद ॥

बस्यौ दरसा कबल हनुमाना । जासु सुपश प्रभु आपु बखाना  
 पर पङ्कज हरिको तुम पायक । दुष्ट दलन जन दीन सहायक  
 बुद्धि निधान हान सुता सतार । संकट मोचन नाम उजागर  
 पवन कुम्भार अक्षनी वारे । लपरा रामसिध शरणाप्यारे  
 पर उपकार सदा मन प्राहीं । असको जो जग जानत नाहीं  
 करौ दिनय कसु कहि नहिं जाई । जो न कहौं तो होत खोटाई  
 कुनौ पवन सुत आरन बानी । करौ छोह निन शेषक जानी  
 नाको भजन करत गौरी राग । धरत ध्यान सुरसिद्ध मुनी राग  
 मम उर सोइ ध्यान बह परी । यह वर देइ दया कारि हेरी

दो० । जेहि विधि होवै मोर हित, करिये पवन कुम्भार ।

विना भजन सिध राम के, मिलेन भव विधि पार ॥

सो०। सकलकाल हित मोर, हरि पद पङ्कजके भजे।

कहौं तुम्हें कर जोर, यह बर शुभस्वहिंदीजिये॥

बन्दीं दशरथ पद जल जाता । भये सुवन जिनके सुर प्राता  
 इन सब धन्य कवन संसार । जिन घर ब्रह्म लीन्ह अवतार  
 पुनिकोशल्या चरणानमामी । जिनके लनय भये सुरस्वामी  
 धन्यकोरि धनि मुहूर्तमुक्ते । रवे लत गोद ब्रह्म शिशु जाके  
 सुर मुनि सिद्ध समाधि लगावे । करि जप योग ध्यान धरि ध्यावे  
 ते सपन्यजन दर्श अधिकारी । सो प्रभु दशरथ अतिरिहारी  
 बन्दीं के कथि पद शिर नाई । भे सुत भरत कीर्ति जग छाई  
 बजरि सुमिश्रा पद परगामा । भये शेष सुत जग अभिरामा  
 लक्ष्मरानाम विदित दिशिचारी । सदा राम पद आता कारि

सो०। रिपु रहदन लक्ष्मराना अनुज, भये सुमिश्रा ताल ।

लघु अनुगासी भरतके, सकल भुवन विख्यात ॥

सो०। चहौं सुत सुख धाम, नृपदशरथके लाइले ।

करों तिनहिं परगाम, जोरि पारिा शिर नायके ॥

बजरि राम सुख धाम नमामी । भक्त बहल सब अन्तर्यामी  
 सीता चरता जोरि युग पारती । कौं प्रगाम कर्म सम बाणी  
 बन्दीं अवध पुरी शुभधामा । पावन मुक्ति धाम अभिरामा  
 निकट पुनो जशरु सुरि बहई । जेहि मज्जन ते सुर पुर लहई  
 पुनि नर नारि अवध पुरवासी । अति मुहूर्ती मुदमङ्गल रासी  
 सरल सुसील सुमति मतिमोरी । जिनहिं राम पद प्रीति न पोरी  
 तिनके चरण कमल कर जोरी । हौं प्रगामीं पुर के रुचि मोरी  
 होउ सौं सौं परमव अचु कूला । देज हई यह बर सुर सुखी

मदासम पद सुमिरसा करहूँ । आन उपायन भयनिधि तरहूँ  
 छं० । जेते चराचर अवधधारी राम प्रिय जिनके मना ।  
 दिनपीयुषल कर जोरि के सन्तत पावै पदबन्दा ॥  
 मोहिं जानिनिजा के कर सदा रतिक मल पद प्रभु दीजिये ।  
 सुरलोक आहि माहि मराडली दे भक्ति बर यशाली किये ॥  
 दो० । देव चराचर अवधजे, धल चर कीट समेत ।  
 स्वग पतङ्ग पुनि हुसक रज, दिनपौं तिन निज हेत ॥  
 सो० । अनुज किनर गन्धर्व, पितृ पिशाचहि यत्न गरा ।  
 करो कृपा किति सर्व जानि दास मोहिं आपनो ॥

सुभिरौं शारद पद कर जोरी । होय लालसा पूरसा मोरी  
 देह बुझान विमल भति मोहीं । ताते विनय करौं मैं तोहीं  
 जो तुम सोपर होउ सहाई । तौ बरगौं हरिगुरा सुखदाई  
 करौ अनुग्रह सोपर सोई । जिहि विधि मोर मनोरथ हेई  
 देह बाक विद्या बरदाना । जाते मोर परम कल्याणा  
 करौ वास स्सना कहु कला । करौं गान हरि चरित विशाला  
 रयास लेइ जिनि मसक लयीरा । तैसे दिन हरि भजन शरीरा  
 पाभवसिन्धु अगाध अपाप । विना भजन हरि पाउन पारा  
 जो चह पाव विना खेवनाय । अथ शिषुडि जैहै मंभधारा  
 दो० । बुद्धि हीन अति मन्द मति, स्तब्ध न रुक उपाय ।  
 कोन्हु चहौं हरिगुरा विशद, करौ सो वाक सहाय ॥  
 सो० । मांगीं यह बरदान, जाते होय विमल भति ।  
 हरिगुरा काहौं बरदान, बुद्धि विवत बल पायके ॥  
 एतौं वदति पद रज शिषु धारी । किन हरि चरित कस्यो विसमी

अतिहि विचित्र परम सुखदाई । कीरते कालितरही जग ह्यदाई  
 काव्य स्वर दहत तुलसीदासा । केशव भगिनि विदित पदों मत्त  
 सो जानव हरि नाम सहाई । को हरि भजिन हिल हो बडाई  
 पुनिकालिका विन करों परलामा । जिन बरसो नर चरित ललामा  
 कही काव्य सब भाँति सुहाई । छन्द प्रबन्ध अनेक बनाई  
 भगवत चरित कह्यो नहिं गाई । जस्य पदारथ दृष्टा राँवाई  
 तिनकी काव्य सोह कइ कैसी । ससन हीन भासिनि है जैसे  
 गुरान अलंकृत बज्र विभिनी । पाठ कश्चुकी सृजति लनी  
 दो० । तिनमा प्रथम पाव्य सम, सत्य कहीँ तजि मरव ।  
 साँच अँच नहिं लागही, शिष्य विरञ्छि श्रुति साख॥  
 सो० । सब प्रकार गुराहीन, भासिल भदेशी मीर दहत ।  
 जति है सुजन प्रवीन, जो सुदृष्टि कर देखि है ॥  
 भाषा भगिनि न जाको भीरे । कहीं सुसत्य गुराज कर जोरे  
 नहिं कवि नहिं कोविद पुराधाना । अति भाति सन्द सहा अज्ञान  
 करत काव्य मन सिधुत्त ऐसे । ला जोरी कर परसत जैसे  
 करिय उपाय सो आवत नाही । तासों विनय करों सब पाहीं  
 होउ सहाय जनि मोहिं किङ्कर । करों काया भगवत गुरा सुकर  
 जानत सकल जीव अविनासी । विदु हरि भजन अस्तं दीपार्थी  
 अस विचारि सुखुनि नर शक्ती । शकहिं भजै धर्म सन दानी  
 विनय विवेक भक्ति अचुरागे । शन सवेह सुधारस पागे  
 तिनके घर सासरो ज नपाजं । जाते भुक्ति मुक्ति गति पाजं  
 दो० । बार बार शिर नाथके, विनय करों कर जोरः  
 करत काया हरि गुरा विशद, लगे नही कहु खोर ॥



सो०। विप्रकवीश्वरसन्त, समीमोरश्चपराध वध ।

वरसौं गुराभगवन्त, कृपादृष्टिश्चवलोकिये ॥

कर्मधर्मनहिं ज्ञानविरागा । नहीनीति शुभगुराश्चनुरागा

केचलहरि गुराकर्येवखाना । जाहे मस सबविधिपाल्याना

रामनाम शुधि श्रौषधधुरागा । शाननैश्रीभवसजसम्पूरण

चिदित निगम इतिहासपुयना । भजनभाषसमनहिंशुर्यआना

जिनहिं सनेह रामपदलागा । सुर सुनिसिद्ध सुखहसभामा

मनप्रसन्नवचनरामप्रियजायो । सुखनेह रहित नितछाके

लोभक्रोधकामादिकाजेते । मत्सर सोह मदादिक तेते

हैंसव अनुचरमाया कोरे । तेकवहूँ आवत नहिं नेरे

रामप्रताप ससुक्तिमनमाहीं । देखिताहु सब दूरि पराहीं

दो०। धन्य सुकृत धनिभागनर जिनहिं रामपद श्रीति ।

तिनहिं युगत कर जोरि कै, बन्हीं रहित धिनीति ॥

सो०। धन्य घरी धनिजन्म, धन्य ताल धनि सातफो।

धन्य जेनर शुभकर्न, भयेजे हरिपद पक्षरति ॥

जन्मभूमिसमवेहटागार्जे । परगान कोड़ा नासवातजे

विदित हमीर पूर डूक ग्रामा । पङ्कतनिकट उत्तर सरि श्यामा

पाताले श्वर धाम सुहावन । सदासुरवद अच पुञ्जनशावन

आश्रमश्री दुर्गा महरानी । बरदायिनि सबविधिकल्पानि

शुभ सन्दिरदिश्रासबिहारी । साहेत प्रियाहृदभान दुलारी

ताके भजत भजत भव बाधा । विनशत जन्म कोदि अपराधा

सुगलि मनोहर सुन्दरधामा । सुभिरत हीत सिद्ध ममकामा

वेत्रवती सरि दक्षिणा आई । मिली पूर्वय सुनहिं सुहाई

संगमसहेश्वरतर्ह्यस्थाना । सिधिदायकत्रिभुवनभाषावा  
दो० । तेहि आत्मककुकासते, भयोउदरहितवास ।

सब प्रकार सुखहीलह्यो, भई पूर मन आसा।

सो० । मयोतर्ह्यो अनुराग, विनाभजनहरिबादि सबा।

करिये प्रथम सवत्यागा, ककुकागानभगवतचरित॥

नमोरसापतिअवधविहारी । जलजासुरालोचनसुखकारी

अद्भुतरामायणासुखभूला । सुनतप्रवसाविनशतभयभूला

प्रथमहिंवात्सीविसुनियान्ता । भरहाजमुनिवरहिंसुनावा

सोइमहाचक्रतलोहिंअतिभावा । सासासुगमनहोयभुलावा

तेमुनिनाथकळापदलागी । करिभाषावरराजअनुरागी

रामकलेवासुरु उपकारा । चाह्यो प्रथमसोबोधअपारा

अवसुनिजोओतनहितहोई । करवप्रबन्धकथासैसोई

नवचौपाई सुनि इक दोहा । तेहि प्रति एक सोरहा सोहा

वरराजजहंतहंसहितनियेका । छन्दप्रबन्धविधिव्रअनेका

दो० । दोऊ मुनिअन्वादेशी, ब्रह्मावर्त सुधाम ।

सोमैकहष हेतु सब, सुनिरिरामगुराग्राम॥

सो० । अलौजीभाखासोध, हीयनकबहुंभरमपथा।

सहि विधि करि कनशोध, करवकथाभगवतसुखद॥

श्रीगुरुचरराजहरिचरित । करैकथाहरियुरासुखदाई

जोहिकारशाहरिनरअवतला । लीन्हदयासुहररामहिभात

कीन्हजोलीलापरन सुहाई । निरामागामवाविकोधिदाई

कहतसुनतअन्तसतेओई । तारशातरसापराचराहोई

हरिकेचरितविधिव्रअनन्ता । शारदशेषनपावतअन्ता

लाहलसलीबराणै कोहि भौंती । युधिमितभूमितअधमनइज्जति  
 संकृत नहींकछू अभ्यासा । हीयकौनविधिमनविश्वासा  
 केवल समनाम कर आशा । कहौंकथाअद्भुतकहिमाअण  
 सम्बत उनइससे इकतीशा । सुमिरिगारापगुरुगौरिगिरिशा  
 सा०। मास अखाडलउर शुभ, तिथि पूतो शशि बार ।

शिरधरिरजषदश्रीपतिहिहीन्ह कथापरचार ॥

सा०। सुनियेसत्तसुजान, प्राता प्रिय रघुनाथके।

मदुर कथा भयवान्, सावधानमनध्यानधरि ॥

बालमीकिसुनिपरमसुजाना । ज्ञानविरतिविज्ञाननिधाना

निकटवेषसरे आश्रमचारु । भक्तिविवेकसुक्तिभराडात

भरह्राज सुनि तहँ बरुबाय । आयेमिलतसुनिहि आम्पत



तहँ सुनिहर्षिमिलेउरलाई । स्वागतपुंछिनिकटवैठाई

बोले भरह्राज कर जोरी । सुनियदयालुबिनयइकमेरी

महाराज तुम अन्तस्यासी । हौसर्वज्ञ त्रदपितवेस्वामी

कह्योकोटिघातजोइश्लोका । करत प्रशंसासुरविदिलोका

शिवमानविष्णुइन्द्रतनकापी । पहतस्वर्गमधिसबश्रुतिबादी

ब्रह्मादिक यह द्रव्य सुपाई । भागविभूति सुरनके आई  
 दो० । विंशति चार सहस्र प्रभु, है जो जगदृशालोक ।  
 सो सुनि ब्राह्मण सुखनते, नरपावत सुरलोक ॥  
 सो० । आवागमन न होय, सुनै जो कोई ध्यान धरि ।  
 सुन्यो नाथ मैं सोय, सावधान अचुराग युत ॥

तदपिन सुभीताय मम ध्याता । जानीसि त्तु आद्यो त्तु मपासा  
 करीष्यालु कृपा अब सोई । जाते त्तु त्वया मम होई  
 जो नहिं कथा सुनी मैं सोई । कहेो नाथ सरकै ननि गोई  
 हंसि चोले सुनि सुनि सुनि गनी । प्रथत तुम्हारे सकल सुख स्वानी  
 अद्भुत कथा सुनावीं गाई । भरद्वाज सुनि सुनु मन लाई  
 है यह कथा जगत सौं न्यारी । अथवा सुनत सुख भव दुख ही  
 प्रथमहिं इन्द्रादिक हठ कीहा । राखेउ गोच उतर नहिं दीहा  
 होतुम सुनि मम फल सनेही । तुहें विहाय सुनाउब केही  
 तुन्हीं ममुक्ति हो सुनि परबीना । रीकानि पुताहु महरि सलोना  
 दो० । ये हैं प्रथत तुम्हारे, ऐसे रत्न अमोल ।

लहत जोहरी सन्मुखहि, मणि मणिकको भोल ॥  
 सो० । सुनौ राम अक्षार, जेहि कारसा भोजगत मैं ।  
 कहेो सो मति अचुसार, बरित सुख तपावन परम ॥

भूप अक्षतिर शंकु सुजाता । कर्म धर्म नृप नीति निधाना  
 सह धर्मिणी ता सुपतिवती । मन क्रम बचन सेवति पर्यती  
 राम नाम निशि दिन दुरव कहई । एकादशि ब्रत सो नित रहई  
 एकवार जब यह ब्रत आवा । विनु जल भोजन दिवस विवाव  
 पति संग विष्णु देवालय गथ ॥ निशि विश्राम करत तहें भयज

तेहिनिशिवाक गगन आई । श्रीपतिनिजमुखताहिपवाई  
 जानिप्रसन्न आहु नृपसेही । सांगद्वरारहे रेउं में तोही ॥  
 गद्गदगिरादिन्दुलपकीन । रेङ्गनसुता एवास अधीना  
 पुनिसांगयो कररिरेहैमाया । रेङ्गसक सुतत्रिभुवननाया  
 हो० । राजल राजा होय प्रभु, और भक्त शिरताज।  
 तासु हृदय यह बासना, बसै करीषनिबाज ॥  
 सो० । नृपमस्तुसुरव बाग, भई दुरत आकाशते।  
 वेददगन सुरव पाव, मनो वासनावापन्य ॥  
 और भक्ति को यह फलपायो । सुरचारी सेइक फलआयो  
 आनंद पूर्वक लोफलखाई । द्रव्य मनोरथ मन की पाई  
 फूल्यो हुमहि कारननाशनी । गर्भसहित भइदुरत सयानी  
 भयो पुत्र दीति नव मासा । तेजवन्त जतुरधि परकासा  
 ताकोनालपिदित जगसीई । अखरीष जानत सबकोई  
 पिद्या धनी नही सब रूजा । करत सदा श्रीपति पर पूजा  
 कहुकहालयहि विधि रतिनाथ । पितातासुननुत्यागत भयज  
 राज्यभार सपने शिर लीन्हा । पावनप्रजहि विधि विविधि कीन्हा  
 पावन स्थाहराज्य करहाये । हेतु तपस्यावनहि सिधाये  
 दो० । करन लभेतप ब्रतवृत्ति, बीति अनायेवज्जकाल।  
 स्वास अधीन बालहरि, तहँ शरव्यो नहि पाल ॥  
 सो० । अथ परीक्षार काज, श्रीपति तव वैशु रादनी।  
 धरेइहस सुर राज, गरुड भेद गेशपती ॥  
 नमितचररा श्रीपतिजगद्वन्द । सुकुलतिलककोशालानन्दन  
 बालमीकि बुनिहरिसुरासावता । भरद्वाज मुनिमुनिसुरवपावत

कहाविष्णु मैंहीं सुरराजा । श्रायोसफलकरनतवकाज  
 जोइच्छा नृप होयतुम्हारे । सोबरसांगजमनहिंविचारी  
 देखिआचरशाभूषितोरे । उपजी दयाहृदयकछुमोरे  
 औरनकछुजानसिमनभोरे । करिहोँ पूर मनोरथ तोरे  
 जानिप्रसन्न आजहृपमोहीं । मनभावत दरदेहोँ तोहीं  
 बोले परमशक्त तब राजा । सुरपति सोनंजोहेंकछुकान  
 मेरेतोध्यानविष्णुकोनसा । करिहैं यही पूर सब कामा  
 सो० हरिकोछाँडिकेओरखों, नहिंसाँगोंबरदान ।

जायदुरेश्वरलोकनिज, मानियिग परमान ॥

सो० सत्यवचनमुनिबान, छत्रविहीनभूपालको  
 भेप्रसन्न भगवान, निजस्वच्छप्रकटतभयो ॥

अविचलभक्तितृपतिहीभक्त । तुरतरूपनिजधीरभगवाना  
 चतुर्भुजी तहें रूपदिरवायो । सुरमुनिनिहृतजेहिद्विपाके  
 चक्र आदि आयुधकरधारे । नीटसुकुटशिरकधर्षणुको  
 भालतिलककेशरकोसोहै । यदिसाशिमुनिदेखतछविमोहै  
 श्रुतिकुराडभकाराकृतशमत । किलमिलगतरीतिपतिमनलागत  
 कतिनिन्दकभुजयागिधिआला । कखुकरादशजलधनभासा  
 आननरन्ध्रमनोहरहासा । अस्तराअधरशुभानिन्दकनासा  
 भृकुटीकुटिलकालदललोषन । चितपतलसितभारमामोचन  
 रदपटअरुणादशनज्योहीरा । निजोदरजिनिभँवरमँभीरा  
 सो० जलुजङ्घपदकञ्चकी, शोभावरिगनजाय ।

जहैंनित्य अजशंकरह, करतविनयशिरनाय ॥

सो० पीतम्बरहवागात, शोभितदीनदयालुके ।

प्रती अमित परमात ब्रह्मिताकी नहिं जात रही ।

नख चुति चरसा धरिनिहिं जाई । मुनिमन यधुपरहत नहें कई

मृदु सुसकान मनोहर खयना । चितय नृपति तन राजिव तयना

काहा बाँधु बर भावत जीका । देउं तुम्हें नहिं होय अलीका

बोले भूप जोरि युवा हाथा । देइ भक्ति अपने पद नाथा

कबहुँ न घटै हृदय ले सेने । अनुदिन बढ़े अनुग्रह तेरे

हैं सि बोले श्रीपति भगवाना । दीन तुम्हें बर भूप सुजाना

भये प्रसन्न जानि प्रभु निज जन । दीन्ह नृपति को यक सुर रथन

वियद काल में करै सह्यई । लहै शत्रु ते तोहिं बचाई

जाइ भयन अपने महिपत्ता । करौ जाय परजा प्रतिपाला

श्री० । सत्य सिन्धु कर सायलन दीन जन्म भगवान ।

देइ भक्ति अनदायनी, पुति मे अम्ल धर्म ॥

सो० । अम्बरीष शिरताज, आय अचध वरपायदे ।

सगो करन नृप काज, वैठि तिंहासन राजपर ॥

नमत चरसा श्रीपति सुररथनी । बालसीधु मुनि करत वरवानी

श्रीमति नाम रूप उजियारी । अम्बरीष कर भई कुमारी

गुरान आरिंशील निशाया । भई विवाहन योग सोबाला

व्याह शोच भोपितहिं अयाय । प्रकट बात यह भई संसारा

नारद मुनि पर्वत मुनिदोउ । आये अचल प्रकट दिन जोउ





देखि कुमारी रूप लोमाने । भये अवश मन रहन ठिकाने  
 पूछी नृपहि कहो या बासू । कोहै कथन पिता है तासू  
 बोले नृपति सुनो सुनि दोई । श्रीमति यह कन्या ममहोई  
 सुनिदत्तान्त सुभित मन भयज । करिइ कान्त नृप नारद कहै ज  
 दो० । सुता तुम्हारी मनहराग, भई हर्षे च्यति चाह ।

करि विचार नृपता सुको, हस संग करौ विवाह॥

सो० । सुनि पर्वत यह बात, कह्यो स्कान्त कभूपसों ।

देज सुतहिं स्वाहिं तात, देहीति कुल धर्म सों ॥

बोले भूप जोरि युगयानी । सुनो बिनय दोउ मुनि विजानी  
 जादि न होय स्वयं चरखासा । आयो दोउ मुनि दीन दयाला  
 करी परीक्षा निज निज भाला । ओर उपाय न मुनि तेहि काला  
 करिहै जाहि प्रसन्न कुमारी । देज ताहि भौ बिनहिं विचारी  
 मुनि नृप बचन भवनहै स्हेज । विशालो करी उगमनत भयज  
 कहा विशालु सो नारद जाई । है कारज यक करौ सहाई  
 पर्वत रूप कपी शाहि होई । जानी कन्या और न कोई  
 कहा विशालु सुनि स्हेहि होई । मन अभिलाष तुम्हारी राहै



गोवार्द पर्वत मुनि आये । सभाचारकहिबिनय सुनाये  
सो॥ जा दिन जाय स्वयम्बर, नारद कृपानिधान ।

हैज रूप भल्लूकको, दीन बन्धु भगवान् ॥

सो॥ और न देखे कोय, एक कुमारी छोड़िके ।

होइ है ऐसीह सोय, कह्योबिहंसिकरुणायस ॥

श्रीपति चरसाकमलकलेरी । बालमीकिमुनि कहत बहोरे

व्याह हेतु नृपश्यो समाज । आयेतहें अगशीतमहिराज

अष्टिमुनि सहिसुरसुशान्धर्षी । सचिव महाजन परजन सर्वा

नारद पर्वत हर्ष बढ़ाई । सुनत स्वयम्बर पहेंचे धाई

करि शृंगारस्तरिचिनसंगबाल । करसरोज सुन्दर जय मासा

रत्न जटित शिर बेसीसोहै । बाल इन्दु छविनिरखत मोहै

शीश फूल छविबरसिन जाई । मनो बड़ा विद्युत अधिक जाई

सुदबन्धन सो मूंधी चोटी । उपचा किरसानि शाकर छोटि

निरखि अलक मेचकलहराई । भागिदूरि नागिनिदुरि जाई

दे० । अवरान करी फूल धुति, मनो तड़ित छवि लेत ।

बाल अरु सारथिनिन्दक, अतिशय शोभा देत ॥

सो॥ टीका जटित विशाल, जैसे छुति उडुयासाललित ।

सोहत सुन्दर बाल, बाल इन्दु छवि दीनके ॥

हरि विरह युग भेहनि जाई । इन्द्र धनुषन लगयो दुराई

शरकदास हय हरिद परने । युग शाब्कवन आगिनिपाने

देखि कपोलन की अरु राई । रत्न कलारंग मयो उड़ाई

शुकनिन्दन नासिका सुहाई । निरखि कीरणन दुरे लजाई

अधर अरु गाल सिद्धि दुमलमे । रद छुति कुन्दकली तब छाने

निखिवदनशशिमशिमपरकासा। मुनिचकोरजनपरमप्रलासा  
 मुनिमृदुवचनशेषउरलाई। वनप्रियविधिनहीसचुपर्दे  
 मन्दमधुरलखिमुरखमुसकई। शुक्रप्रियउरदरारबझरवाई  
 चिबुकसुभगज्योंकूपअमीके। देतअनिलह्विनिरखतनीके  
 दो॥ विबुकमनोहरह्विललित,मनोअमीकेरूप।

देतवनतपटतरनहीं, शोभाअमितअनूप॥

सो॥ धरदसकुराइभराय, जगयोनीरदपटतरे।

करतपानहर्षाप, सन्तसुमतिदृढभक्तते॥

कराठकलितअनहर्षबदावत। भयेकलितलखिमोरपरवत  
 मुक्तावलीशिरोधसोहाई। मनोदीसिउडुगराअधिकई  
 हस्तशिरोतनअङ्गदराजत। कोटिप्रभाकरलखिधुनितान्त  
 उदररेखत्रिबलीतिरबैनी। परतदृष्टिसज्जनसुखदेनी  
 लखिनिस्रोदरभंवरगंभीरा। स्वातचक्रविचसरितअधीरा  
 श्रीरामफलकसुन्दरमनभावन। अमितखिन्मृंगराजलजावन  
 परपङ्कजमुनिजावकशोभा। मुनिअनसधुषविलोकतसोभा  
 ह्विअङ्गाररूपकीरशी। मनोदीसिउडुशशिमरकाशी  
 उपमाकोअसकविजोकहई। पटतरसकलभवनलघुअई  
 दो॥ नीलघररासारीसुभग, सोहतगौरशरीर।

ह्विअङ्गाररहिजोकहै, कोअसकविमतिधीर॥

सो॥ हेजोलक्ष्मीरूप, शोभाताकीकोकहै।

अद्भुतकलाअनूप, रूपरशिमनमोहनी॥

दिडुकतचलतधरतपगधीरे। लाजसँकोचजनकजनतीरे  
 यहविधिराजमहलमेअई। जहंसमाजसबसाजबनाई

दीर्यसभा जब रूप बुझारी । भये छकिततन दशा विसारी  
 जो जहें तहें तैसहि रहिगयऊ । चिन्तलिरखेसे नौनहि रक्षज  
 सकल सभादिशि देखि कुमति । लह्यो नवरकीउनिज अनुहारी  
 मनही मनहिं बिलरति दाढ़े । सुगिरति बिष्णु नाम मनगढ़े  
 तुम प्रभु करुणासिन्धु अगाध । पूरणा करी नाथ मम साधा  
 तुम्हें छोड़ि मैं कासों बरऊँ । और पुरुषनहिं मनतर धरऊँ  
 करो लालसा पूरणा नाथा । शोरि क्षान्त प्रभु तुम्हरे हाथा  
 दो०। रमारूप बालाधरे, डूँढत कर अनु लख

पख्योन कोऊ दृष्टि तर, तर बुनि सुरगलभूप॥

सो०। गड़ी दृगन की कोर, रूप रखा मयी कल की ।

नारद पर्वत और, तनकन देख्यो भूलि कै ॥

भयो शोक दोउ सुनि अनभारी । हमदिशि कुँवरै नर अतिहारी  
 दृष्टि कुँवरि जो हम हग परई । हमें बिहाय आनको बरई  
 सभामध्य मुनिबनिठनिबैठे । अकड़े फूलै तन तन सेठे  
 जेहि अगली लपकन्याजई । तोहि पडली मुनिबैठे धाई  
 बार बार इत उत उठिबैठे । रह सुप साधिहाथ दोउसेठे  
 पद्गतकीन्ह सुनि युक्ति उपाई । तबहूँ कुँवरिनि कलनहिं आई  
 कह राजा तब कुँवरि हँकारी । देखु सभा सब और निहारी  
 ये नारद पर्वत सुनि होई । बैठ सभाइन समनहिं कोई  
 लखु रञ्जक लुच आँख उठई । हेजमसाल कराठ पहिराई  
 दो०। आवसु मानि पिता तब देख्यो दृष्टि उचार।

रही सिसकि सुनि कलकपिपै, देखि रूप बिकल ॥

सो०। इरत भई उर माहिं, देखि भयानकरूप सुनि ॥

सहसि गई धिरनाहिं, कल्पगाल रोसा घली श्री  
 कहा नृपति सुनु राजदिशोरी । फेहिकाररा सुनि कवि मुदुयौरी  
 बोली कुंवरि पितादिशि हेरी । हे काररा सुनिये नृप मेरी  
 यहं नारद पर्वत जोड नाहीं । हैं दुइ भालु कीरा यहि दाहीं  
 पुनि पितु कह सुनु राजकुमारी । हे जयमाल सक उर डारी  
 पुनि दीरव्यो सुनि ओरकुमारी । बोली वचन मधुर सुख कारी  
 मरकटभालु बीच यक रूपा । ओहि पिताम्बर बेट अनूपा  
 बोइश वर्ष अवस्था जाख । श्रीट सुकुट राजत शिरताह  
 प्रभुता भास चमक सुति कैसी । फिररा समूह दमक रबे नैसी



ऐसे वचन सुनत जय भयऊ । सकल सभा मुख सुति उड़ि गयऊ  
 छं । श्रीनाथ कुरुग कुञ्ज श्रीहित मध्य संसद जायकै ।  
 प्रकट नलख्यो स्वरूप नर पुनि गुप्त बेटे आयकै ॥  
 ते समय लखि श्रीमती आई निवट बज्र हर्षायकै ।  
 जैमाल दीन्हो डार प्रभुगल युगत हाथ उठायकै ॥  
 सुरदेरिप कौतुक शिरी धरन भ दुन्दुभी धुनि तावहीं ।  
 करि गान नृत्ये अक्षरा बज्र सुमन सुर बर्षा विहीं ॥  
 गहि वौह सुर नर नाह कन्ये साधलै अपने गये ।

बैठे साक्षात् सनुज ऋषि मुनि देखि सब चकित भये ॥

सो०। पुनि ससुभाई दारिका, करि हठ भूप प्रवीन ।

जायनि कटतव ब्रह्मबर, डार हार गल दीन ॥

सो०। सुमन वृष्टि तेहि काल, सुरन कीन्ह आकाशते ।

जयजय दीन दयाल, करत अङ्गना गान नभ ॥

भइतव लुप्त वृष्टि ते बाला । गगन शब्द आई तत काला

श्रीमति बाज्हा पूरसा भयऊ । जोति जो आदि शक्ति की रञ्ज

आये विष्णु रमा के नाथा । आदर सहित गये लै साधा

लखि आश्चर्य सभा सदभूषा । गमने आश्चर्यनि जत निरूपा

गिर्यो शोक गिरि पर्वत ऊपर । नारद धरयो अश्रम छाती पर

कीन्ह गमन मुनि विष्णु हिलोका । पड़ेंचे भरे रगन जल शोका

कहा विष्णु सों सुनौ हापाला । तुम सब जानौ दीन दयाला

कपल हसेउ जो मध्यहमारे । बैठ आयतेहि ममन निहारे

जैसे वास सुमन उड़ि जाई । तैसेहि गा लै कुंवरि भगाई

सो०। दीन्ह विपुल दुख देउनको, लै गयी बाल अनूप ।

है यह काम तुम्हारे, सुनौ नाथ सुर भूप ॥

सो०। है परकट संसार, नाम तुम्हारे नाथ जी ।

कीन्ह कहा करतार, सेसो तुम्हें न चाहिये ॥

बोले विष्णु सुदौ मुनि सज्जन । काम क्रोध कात हूं स्वहि छजन

रहत मोह साधा सों न्यारे । हैं हम त्रिभुवन के रखवारे

छल अरु रन्ध्र सों हमें नै काजा । वृथा शोक मुनि मन उपराजा

वैद्यो पुत्र आय वहाँ जोई । होइ है ज्ञान वाच वरु कोई

कह्यो बाल जो प्रति अतुहरी । सो आश्चर्यन मुनि व्रत धारी

बज्रत असुर ऐसे बलवाना । निजरूपरूपलटलभनमाना  
 विहू मेरे तन के हैं न्यारे । विभवप्रकाशबसन अनियारे  
 गदाशंख औ पद्म सुदर्शन । ये लखात मेरे तन दर्शन  
 कऊ मुनिकबहमसे असकाजा । होइ है दोष देत सहि लाजा  
 सो०। करि विचार समझौ चुनी, तुम तो परम प्रवीन।  
 की यह काम हमारो, की औरै कोइ कीन ॥  
 सो०। कह मुनि सौंच दयालु, फिरतुन्हरे मन काबसी।  
 कीन्ह हमें कपि भालु, मध्यसमाधितु काजके ॥  
 कह जाकी इच्छा जस होई । देत ताहि मोहिं बेर न होई  
 पायो नारद जो बर मांरा । भयो सुफल पर्वत अनुरागा  
 समुझौ मुनिक कहव फि धूले । काके फूल फुलाये फूले  
 जो करत्यों बरसौं इनकारा । सुधा होत सब परराह मारा  
 काज हमें बरदान दिये से । नहिं कारज कहु काम किये से  
 हृदय क्रोध अभिमान मियेगे । अपने सुख सौं न्याय चुकावो  
 सुनत बाक मुनिरह्यो चुपाई । चले अरुध मन क्रोध बढ़ाई  
 पहुँचे अम्बरीष के घासा । बोलवचन जनु अह विदुर्यासा  
 हेतव चूक सबै सहि धाला । कीन्ह कुंवरि गितु हमें बिहाला  
 सो०। हमें आश भेरादिके, दीन्ह और को बाल ।  
 हैं हम बश अब क्रोधके, लेज शाय ततकाल ॥  
 सो०। जैसे फेंसे हम आश, प्रीति जाल के ध्यात में।  
 तैसति मिर में जाय, बसो वृषति सस शाय ते ॥  
 तुरतै प्रकट भई अंधियारी । जैसे भय घटा अति कारी  
 ज्योति सुदर्शन कीन्ह प्रकाश । भई सुतितहाँ तुरत तमनाशा

सारिव को तु क मुनि नो भंगे । चक्र लु द्यन पाछू लागे



जित देवत तित चक्र दिखई । गये युगल मुनि सह मि सुखाई  
खायो चक्र चक्र के मारे । विष्णु लोका तइ ज्ञाय पुकारे  
आहि आहि शीयति भगवाना तु स विदु रसा करे को आना  
सरो नाथ व्यथा अब तत पर । लेइ ब्रह्म हर्षे यहि अवसर  
अम्बरीष शरणाहि मुनि लहज । करे खितय जो तिज मल चहज  
जो नृप चहे तो लेइ ब्रह्माई । हृषिबिलु आन न लोउ सहाई  
सो । श्री यति कर्तव्य जालिये, बोले मुनि करि कोषी

कीन्होतस झल ह भसों, लेइ शाय गिर रोधि ॥

सो । होइ है इ शरथ नाम, अम्बरीष के बंश में ।

लेहो तिनके धाम, हनुज रूप अयतार तुम ॥

श्री मति जन्म क्षेत्र ते होई । है प्रति विरख भगवती होई  
सोक न्यासि थिला पति पाई । करि है तोहि यो धरा भर लाई  
होइ है तासो व्याह तुम्हारा । मुनि होइ है तुष सदन उजारा  
कीन्ह कपट रजनी चर जेसे । नरयो दार फारि कर्म अनेसे  
हरि है विदर नारि तुम्हारी । गिरह विद शतुम होइ दुवारी  
खोजत ताहि फिर ब्रह्म जेसे । धेही जहं लहं शोक कठोरा

भयोविष्यु मन हर्ष अपारा । कीन्ह शाप मुनि अङ्गीकारा  
 रोउ मुनि बज्र रिश्रवध पुर आये । दीन बचन कहि बिनय सुनाये  
 देखि भूप मुनि निपट पुरवारी । कीन्ह चक्र ते तिनहि उचारी  
 हो० । भयो विगत जब कष्टते, मुनि मन कीन्ह विचार ।

कबहुँ कैरव विवाह सुत, जबलों यह संसार ॥

सो० । भयो राम अवतार, मुनिन शाप ते श्रवध में ।

गोसाया ते पार, फंसिगे साया जाल में ॥

बालमीकि मन परम प्रलासा । करत कथा हरि गुरा परफासा  
 विप्र एक त्रेता युग भाहीं । कौशिक नाम विदित सब दाहीं

विद्यवान् गुरा ज्ञान निधाना । गिरा गान में निपुरावरवाना

यांच ज्ञा करि करत श्रवण । हत्यो श्रवधन पयसन क उदार

पूजा ध्यान विष्यु दिन राती । रहत भजन हरि के नित भाती

सात शिष्य तिनके संग भाहीं । गान शारत्र में कोउ सम नाहीं

श्रापिया विष्यु को नासा । बसत देहरी जीह के धामा

भोप द्वाक्ष नाम हिज कोई । रसिक प्रवीरा धन दधन सोई

एक दिवस मुनि कौशिक गला । भा प्रसन्न मन अति हरधान

हो० । कौशिक को शिष्यन सहित, बोसि भवन निज लीह्य ।

भ्रातृ मिसहि विप्रहि बद्धत, इष्य सिन्धु सम दीन्ह ॥

सो० । करि विचार मन साध, निपट पुरवारी देखिके ।

तिन्हें अज्ञान दिय बांध, नित प्रतिभोजन के लिये ॥

त्रियप द्वाक्ष सुशील विनीता । नारि धर्म पति बर्त पुनीता ।

नाम सावली परराट नारद । भरी सुगंध निर्मित तन ताख

पति सिताय दूसर नहि देवा । मन क्रम बधन करति नित सेवा



पूजाहितकौशिककेबासा । लावतिरयोनिबदासबसामा  
 सावधानपतियुतनितसुरवसे । सुनतिथजनकौशिककेमुखसे  
 गानमेंकौशिकनिपुराकहायत । सुनिओताप्रेसीतहँआयत  
 विदितकलिङ्गसकहैदेशा । गानसुनतहँआयनरेश्या  
 काप्रतिबादविषयुयशगावो । तसउत्कर्षहसारसुनावो ।  
 सुनिकौशिकजनमहँप्रतिबोधे । कहसुपहोनुपविषयुविरोधे  
 दो० । कहांविषयुलक्ष्मीपति, सायाशुरागोपार ।  
 कहांसनुजसतिबूहू, प्रसितबलहँद्वंदार ॥  
 सो० । करतप्रशंसानाहिं, विषयुछोड़िकेओरीकी  
 चलतनयाभगसाहिं, अत्तकालपरल्लामकरि ॥  
 नपकौशिकअसबचनसुनाये । चारस्वशक्ततुपतिबोलाये  
 कहकौशिककेआगेगावो । असउदारताताहिंसुनावो ।  
 लागेकरनगानतबचारी । सोकौशिककेजनदुखभारी  
 होइअसुन्यजनसहँअनुमाना । करिययत्तस्वरबरेनबाना  
 शिष्यनसहकौशिकजनबोधे । निजनिजकर्यास्थितररोधे  
 परीउन्हेंधुनिअहधुनिठानी । करैप्रतिज्ञाकौशिकहानी  
 तानतरङ्गगानबझछोड़े । शिरधुनिहृथाकर्याइनफोड़े  
 भेअशक्तकछुचलनउपाई । बकारिकानतबरखीचुपाई  
 बझहठकीन्हीनुपतिदुबारा । भयोशोकसतकीन्हीविचारा  
 दो० । छेदेउरसताउलटिके, निजनिजपरमसुजान ।  
 रोख्योभारंगगानको, राख्योभर्राप्रमान ॥  
 सो० । भेकोधितभूपाल, कीनछीनधनसाधतब ।  
 कीन्हदूरतनकाल, पन्नासादिकदेशते ॥

बहते निकसि उत्तरदिशि गयज । पङ्कथे जहाँ कुलाहल भयज  
 एक दिवस विधिसे मन आवा । ब्रह्मलोक भङ्गति नहिं बोलावा  
 हृती सुरन उनकी अभिलाखा । करिसन्मान उन्हें तहँ राखा  
 श्रीपति एक दिवस तहँ आये । साबरतिन्हें बिधाए पुर लाये  
 बिधाएलोक जब पङ्कथे जाई । सुरन लीन्ह मन हर्ष बढ़ाई  
 विविधि विधान भई पड़नाई । रखे तहँ सच अति सुख पाई  
 बालकी कि सुनिका हत बखानी । भरछाज सुनि सुलुभ म बानी  
 तेहि सयाज लहँ मोहूँ रख्यौ । कौशिक मान सुनत तहँ भयज  
 सुनत समाजनाइ सुख गाथा । भये प्रसन्न रमा के नाथा  
 दो० । बोले विहँसि बिधाएतब, हैं सब परस विरहा ।

जनसा बाधा धरि राग, हैं हमरे प्रिय भक्त ॥

सो० । देखो बड़ सिरों पांव, दीजे इन्हें विचारि के ।

बड़े भजन मस भाव, नित प्रति श्रोतन औरको ॥

कहकौशिक यों हरि सुख दाई । दीन्ह सुन्हें निज गुराब जताई  
 सेवक सहित हृदारे लोका । रहौ सदा परि हरि सब प्रोका  
 रहै बालकी पति के संग । यति पद दर्शनिहें पति अंगा  
 बालकी कि बोले नृपु बानी । परम पुनीत मधुर रस सानी  
 माध्य सभा सुर पुर इक द्वारा । राजत श्रीपति अथम उधारा  
 करिये तहँ की कीज बढ़ाई । जहँ राजत पद्मा सुख दाई  
 भृत्या सह चरि बैस कि शोरी । खड़ी रसा आगे कर जोरी  
 किय अरस्य कौशिक तहँ गाना । भये सुखी सुर सब सुनि ताना  
 तुम्बुक्षनास एक मन्त्रवा । बैठि समाज जहाँ सुर सर्वा  
 दो० । मान तान की मान दय, काये तान बितान ।

कीन्ह प्रशंसा बद्धत विधि, सुनिके श्री भगवान् ॥



सो०। सिन्धु सुता सुनि गान, भइ इर्षित अति शय हिये।  
दीन्ह सो अपने यानि, मरिण मारिण क बद्ध मोलके ॥

समय सुवृत्य सखिन की अर्इ । सिन्धु सुता तब दीन्ह रजाई  
सभा मध्य जो होई पराये । सो नहिं बैठे जाई उठाये  
सुनि असुष घन सभा सदनाना । गये सबे निज निज अस्थाना  
तहाँ सखिन नहिं कीन्ह बिचार । कर गहि नारद तुम्हे निकार  
भई देव ऋषि अति शय भीरा । करत बिचार भये सुनि धीरा  
गान नावमा मोसम कोई । उपज खचिते भया न होई  
करीं कहा देवतन बड़ाई । सत्सुरख दोरे सकें न गाई  
अगो बिषणु सभा गन्धारी । गार्ये बैठे हूँ निकाारी ॥  
अति दुख ठाढ़ होन नहिं पावे । तहाँ वेठि तुम्बुरु धुनि गावे  
सो०। श्रीसों कद्यो सु नारद, विपुल रोष सुन्ताप ।

कीन्ह अयज्ञाहमहिं जस, तब तुम लेवो शाप ॥

सो०। धरती धरि जस पाँच, डाख्यो मोहिं घसीटिके ।

फेकी अवनो जाव, उपनि राक्षसी उवरते ॥

राक्षसि उतरने जन्म तुम्हारा । होय प्रकट यह शाप हमारा

बद्धरि क ह्यो मुनि परम विवेकी । जव धरणी पर पुनि तुम फेंकी  
जव अस बाक् देव ऋषि बोले । व्योम रसातल दिगाज डोले  
राक्षसी सहित रमा के नाथा । बोले बचन जोरियुग हाथा  
क ह्यो रमा मुनि तुम तप धारी । शिर पर आजा नाथ तुम्हारी  
मुनो विनय डूक मुनि पर बीना । हैं हम तुम्हरे शरणा अधीना  
करु प्रति ज्ञान जो हम अनुसरहीं । घट शोणित अपने ऋषि भई  
पिये राक्षसी शोणित सेई । जन्म हमार ताहि सों होई  
दया लागि मुनि कहा बहोरी । होइ है पूर मनोरथ तोरी  
दो० । नारद सों बिसागुहिक ह्यो, कीन्हो वृथा बिषाद ।

जपतप योग सुदानते, परम प्रिया मोहिं नाद ॥

मो० । करै भजन औ गान, मोहिं प्यारते प्रारासम ।

सत्य बचन मम मान, प्रथम बेदते नादवर ॥

गानते मुनि कौशिक हि बड़ाई । हैं जग बिदित सुरन मन भाई  
तुम्हुरु गान सन्न मोहिं भयऊ । तुम कस हृदय क्रोध निर्मयऊ  
जो होत्यो मुनि परम सुरागी । तौ कस करत सभा मम त्यागी  
जो उत्कर्ष चह्यो मुनि राई । सीख्यो गान कहूं तुम जाई  
गुरु बिनु विद्या कोउ तपाये । तैसे गुरु बिनु गान न आवे  
चह्यो जो सीखन मुनि तुम गाना । तो मैं तुम सों करत बरखाना  
विप्र अलोक बिदित जग नामा । है गिरि उत्तर मानुष धामा  
सीख्यो जाय ताहि दिग रामो । सो बत भावा चह्ये उठ जानै  
तब नारद मुनि करि अनुमाना । आये तुरत अलोक स्थाना  
दो० । गान राम जो तात सों, सुकृत रह अस्थान।

परतहि शब्दहि अवरामें, उपजत उर सुखस्थान ॥

श्लो०। स्पडे सैमुरय सजि सज्ज, यक्ष अयसरा गन्धरव ।

निकत अलोक समाज, पञ्च सहासुनिहर्षयुत ॥

कहा अलोक कहां सुनि आये । कथा की गृह स्वहिं दर्श दिखाये  
 कहा पाय आजा श्री नाजा । आये सिखन नाह सुख गाथा  
 सुनिये बिनय कहीं कर जोरी । करी आरा पूरा हिज मोरी  
 आपन हात कहां लों कहिये । कही कथानिज सुनि सुरय सहिये  
 आसम्पदा कयन विधि पाई । दो अलोक सब कही सुनाई  
 यक्ष भूपति भुवनेश सुजावा । धर्म धुरीसा सुनीति बरवाना  
 तासुरज सब प्रजा सुरपारी । सुनत हवा नृप धीर दुखारी  
 प्रान्त वास अहमिति शिर छार्ई । कहा हिं डोर नगर बजाई  
 भावत भजन करी जनि कोई । धिबु प्रशंसा कतों न होई

श्लो०। करी विभव सब गान सब, वह उपदेश ह नार ।

जौन कान कारि है नहीं, देहों नगर निकार ॥

श्लो०। आयो सरिता तीर, विप्र रथा हरि सुराणि युक्त ।

डासि पस्त्र सुव धरि, लग्यो करन भगवत भजन ॥

पाइ खयर नृपहि नहिं सतावा । सुरत बहोते ताहि भगावा  
 कहु दिन गये भूमतन त्यागा । गास सुख यमराज अभागा  
 लह्यो न तन मानुष तहें रजा । रीन्ह दितासा तनु यम यना  
 लागी नृवा सुधा अति भारी । जग प्रसा यमराज पुकारी  
 का पराध अन्तक भैं कीन्हा । जो तनु हमें दिवाचा रीन्हा  
 कह हातान्त लुहि नहिं सतावा । तेहि कारनात लुबनु जन पावा  
 जैसे नगरते हिजहिं निकारा । तेहे स्वर्गते लुहिं हय टारा  
 जो तोहिं सुधा सताये आई । करु भक्षरा पल सुवा जाई

बद्धतद्विषसलौंयहिलनरहैहै । सुधापिपाससदातृसहिहै  
 सो० । पैहैजन्मुकजन्मफिर, तृमतिमन्द गँवार ।

बद्धत कालवीते पुनि, होइहै बेड़ा पार ॥

सो० । धरिहैमानुषरूप, यचैसत्यपरमारा कठ ।

होइहैहहीस्वरूप, सहितज्ञानचैतन्यता ॥

कहा अलोकमधुरसुदुजाती । सुनु आश्चर्यकथापुनिशानी

हैहमहीभुवनेशसहीधा । भयोउरूकआयबहिहीपा-

धर्मराजजबदिजसुरखगार्ह । कीन्हबातयहिगिरिपरआई

सरितमध्यसूकसुर्बाबहता । लागि सुधारोद्योतेहिजाता

पुनिनभपददेख्योहिजबोही । सयोजासुविदुकारयाप्रोही

चक्षेबिसालसुफुलधिरदारी । चकितभयोहिजरूपनिहारी

कहहिजपलबाजुदजनिखाहू । जोरखेहोपाहूपछिताहू

गहिंज्ञानतदृपूहविहंगा । हैभुवनेशनरेशकोअंगा

फहैउचरितसबआयनरोई । कहानमिटेसिखाबिधिजोई

सो० । समअपराधबिसारिकै, दीन्होंआशिरबार ।

होयजन्मसावुषतन, रहैरागसबयाद ॥

सो० । गयोविप्रसुरलोक, औरसनौरथपूरकर ।

रह्योनरुकोशोक, मनवाञ्छितबरपायकै ॥

बन्धिरराश्रीपतिभगवाना । बालसीकिमुनिकसबखाना

विप्रअलोकअभिलगुरापावन । लग्योनारदहिंरागसिरवापन

राजवन्तमुनिकोद्विगदेखी । मृदुलबचनतबकह्योविशेखी

करीसाजगुरुसोंशिमजोई । विद्यावाननिजुरानहिंहोई

गानसिरवनकेदहअनुरागा । भोजनदिव्यमधुरमृदुरागा

लाभ खर्च मंहं होय उदार । भाव भक्ति औ तोष अपार ।  
 इन बात न ते लाज जो करई । अवशिष्टानिये काजन सरई ।  
 करे लाज औ बे मन गावै । तासुराग कबहूं नहिं भावै ।  
 गान खोलि मुख भार समाना । अकड़ तोलित न करै जोगाना ।  
 दो० । भरे जो रागी खरन हंसि, डरि कै कम्पित गात ।

वृथा रागमाला करै, सुनि औतै न सोहात ॥

सो० । करिय न कबहूं गान, सुधा प्यास के आश बश ।

बरजत सुनि विज्ञान, तिभिर निशा अरु शोक में ॥

जब अलोक अस बचन सुनाये । भे प्रसन्न नारद मन भाये ।  
 कीन्ह गान प्रफुलित मन खोली । भये रागि सिख गुरु अमोली ।  
 जब सिख भये नाद मुख गाथा । कीन्ह अशीश हर्ष मुनि नाथा ।  
 धीते कल्प मान दि प्रवासा । येही तुम द्विज नुर पुर बासा ।  
 श्रीपति मूरति मंहं मिलि जेही । हरि स्तरति मंहं जाय समेही ।  
 चल नारद तुम्बुरु अस्थाना । जीतौ तेहि करि मन अभिमाना ।  
 पङ्कचे मुनि तुम्बुरु आगारा । देख्यो केतिक बिबिध प्रकार ।  
 बज्रतक हार भीर नर नारी । सकल बिकल तन निपट हुवारी ।  
 कोउ बेशिर कोउ नयन बिहीना । कोउ धायल कोउ अतितन खीन ।  
 दो० । कोउ अबल कोउ पाद बिन, कोउ बिन मुख बिन नाक ।

भरे शोक जल हृगन कोउ, करि न सकत कोउ बाक ॥

सो० । कह नारद गति देखि, सत्य कही तुम कोन हो ।

कहौ सो कथा बिशोखि, कोहि कारसा तुम ही दुखित ॥

राम रागिनी नाम ह्वारा । भयो भारु हम जीव पिथारा ।  
 नोरखे नारख भये इक रागी । पढ़्यो राममाला अनुरागी ।

सिखि कै गान गर्ब अधिकारि । बन्धो नवयोगी मूढ़ मुड़ाई  
 समस्वर ताल तान नहिं जानै । ऊँच नीच गति नहिं पहिंचानै  
 धुनि गिटकरी न तेहि कछु आवै । गान प्रभात को निशि मुख गावै  
 यहि कारणा हम सबै बिहाला । फँसे हायदार राग मुख जाता



तुम्हुरु हमे स्वजय मुख गावै । तब तो जीव सुये तन आवै  
 सुनिके नारद भये उदासा । गमने लाजित श्रीपति पासा  
 करि रोदन निज कथा सुनाई । परे धरि रागहि पद लपटाई  
 दो० । बोले चपन विवधु तब, सुनु नारद मुनि राज ।  
 कछु दिन धरो धीर बन, करिहो पूररा काज ॥  
 सो० । होइहै पूररा काम, अष्ट बिंशत द्वापर युगहि ।  
 होय सुदेव के धाम, उदर देषकी जनम लै ॥  
 हे जो गान पर प्रेम अपारा । आयो तहँ तुम देव उदारा  
 तहँ हम तुम्हें सिखाउबनीके । होइहैं पूर मनोरथ जीके  
 तौ लोमम करि बाक प्रमाना । जहँ तहँ सिखौ जाय तुम गाना  
 सुनि नारद मुनि बल हर्षाई । वास रागिनी मनहिं समाई  
 गयने इन्द्र लोक ययलोका । यरुरा लोक अरु अग्नि के लोका  
 यहँ जहाँ मुनिवर तहँ जाहीं । जेहि विधि शंकापवन कइं नाहीं



गये जहाँ तहें भो अति आवर । चले मिलन उठिके सुर सावर  
 एक दिवस विधि लोक सिधाये । पढ़ें चि भयन विधि परम सो ह्ये  
 ब्रह्म समाज गान होइ रहेऊ । सुनि नारदहि हर्ष अति भयऊ  
 दो० । तहाँ संग रागीन के, नारद परम सुजान ।

जस अतुराध सुर ह्यो मन, कीन्ह तहाँ तस गान ॥

सो० । सुनि अज नारद गान, तन पुलकित मन हर्ष युत ।

सकल सभा सुख मान, कीन्ह प्रशंसा विधि विधि ॥

द्वपर युग शिय हरि अचतारा । भा सुख करण हरण महि भारा

सुमिरि बचन तब नारद आये । करि अस्त्र प्रभु निकट बिठाये

जाम्बवती हरि की पटरानी । संग रागिनी विपुल सयानी

तिन्हें बोले बोले भगवाना । सिखवहु नारद को कल गाना

जाम्बवती तब गान सिखावा । सुनि नारद अभिमत फल पावा

कृपा ताहि पुनि आप सिखाये । सिखि पुनि गान निपुण कहलाये

कह्यो बिहंसि बसु देव कुमारा । सुनौ देव अट्टि बचन हमारा

करब न ओध कपट सुनि कबहूँ । बैर भाव विसरा उब अबहूँ

याते होत सकल गुण हानी । करौ प्रमारा बचन सुनि ज्ञानी

दो० । बोले बिहंसि बचन पुनि, कृपा सिन्धु सुख मूला ।

परि हरि ईर्ष्या बैर सब, जानौ म्वहिं अनुकूल ॥

सो० । तुम अरु तुम्हुर साथ, करी गान नित हर्ष मन ।

रहौ तहाँ सुनि नाथ, शुभ चिन्तक मन्त्री सुखदा ॥

बालमीकि मुनि कथार साला । कहत सुनत बिन शत भ्रम जाना

भयो प्रकट जग अट्टि बरदाना । यातु धान रावरा बलवाना

विभव धन दसाखि भयो दुखारी । कीन्है सिवर्ष सहस तप भारी

भेप्रसन्न तब मन चतुरानन । कहां माँगु बर पुत्र दशानन  
 कौन हेतु दासरा पुरव तोही । सो सब व्यथा सुनावो मोही  
 सुनि विधिगिराजोरि युगहाथा । बोला बिहँसि बचनदशमाथा  
 होइ न कवहू मृत्यु हमारी । तेहि कारराकीन्ह्यो तपभारी  
 कह बिराञ्चि सब जग ममरोंचा । काल कौर सो कोउ न बाँचा  
 है यह बात अपन कर नाहीं । कहीं सत्य समझ मनभाहीं  
 दो० । कह विधि सो रावरा बझरि, करौ सिद्ध इकबाच ।

यस्य दैत्य गन्धर्व सुर, अरु अक्षरापिशाच ॥

सो० । लगे नइतने आँच, भेरे त्रिय यहि जीव को ।

करे परा यह साँच, दया नाथ आरतिहररा ॥

एक कठिन प्ररा और बिधाता । सुनइ प्रभू दैचितममवाता  
 सुता सो जबलौ होत बुयाशा । तबलौ होइ भोर नहिं नाशा  
 सय मस्तु बोले जगदीशा । गयो सुरा सद छक दशशीशा  
 धनद सुरेश दैत्य सुर शोशा । धरुगा सप्त गन्धर्व नरेशा  
 रवि शशिगगन देय दिगपाला । पावक पवन भेध यमकाला  
 जीति तिन्हें दासरा पुरव दीन्हा । हठ सबही अपने बश कीन्हा  
 पुनि दराडक चनगा अक्षिनी । सप्त ऋषिन सो कह हठबानी  
 देइ दराड मोहि जानि सुरारी । नहिं करिहो तुमसो हठरारी  
 भये शोध बश सुनितपधारी । लगे करव सब शोचबिचारी  
 दो० । बोले शोधित सप्त ऋषि, अरिद्वगनीरजरस ।

है एक शोशात अङ्ग-मुँ और न कछु हमपस ॥

सो० । भयो सकल कब्याद, कहा बाक अभिमान पुत ।

देइ सोई छुद जात, जानि भलाई आपनी ॥

क्रोधश्चनलसेगलजिमिषाला । चलाद्योजघटकेदशभाला  
 बालमीकिसुनिपरमप्रवीणा । लगेकहनयककथानवीना  
 विप्रसकगिरतसमदनाभा । हरिपदभक्तानिपुराणुराधामा  
 कारतयोगतपसैतियसाधा । उरभरोसधरिलक्ष्मीनाथा  
 याश्चभिलाषबसीसनतोके । होइसुतालक्ष्मीसमजाके  
 भोरसांभूपयघटाहिंभराई । कारतश्चवाहनलक्ष्मीलाई  
 पुनिनिजपतिनीकाहिंपियबे । आराप्रियाश्चरधङ्गकहबे  
 सोघटरावरालीन्हछोड़ाई । आवानिकटश्चविन्दुस्वदाई  
 घटशोरितसोंश्चविभरदीन्हा । लैकाररामनलङ्गकोकीन्हा



दो० । दीन्हजायमन्दीदारीहि, कहाबज्जरिसमुमान्य।

हैघटभराहस्ताहल, सरबौअतनकराय ॥

सो० । चलतसोपुनिरराधीर, विजयलड़ाईकेलिये।

परेजेसन्मुखवीर, जीतितिन्हैनिजयशकिये ॥

समरभूमिजेभटसनसारखे । जीतिसर्वेनिजयशकरिराखे

काञ्चितभूमिश्चकाशपताला । जीतिसुरासुरसरख्योशाला

बन्धादेवनागसहिपाला । लखोपकाडिवरबसदसभाला

भरीजोशिरतेहिश्चहविनिपाला । तिनसंगकीन्हैविभोगवितासा

जब या खबरि मंदोदरि पाई । डाह बिबशशिर धूर उड़ाई  
 कह बिय खाय मरब भलनीकी । सयति डाह बहिं जीवव जीको  
 जानि गरल मय सुता सयानी । कीन्ह पान घट शोशित आनी  
 लाग्यो मनोरथ तरु फल सोई । जाते हत निश्चर कुल होई  
 एकतो पयलक्ष्मी आवाहन । दूजे शोशा प्रदृषिन तन पावन  
 सो० । करत पान मन्दोदरी, कीन्ह गर्भ परकास ।

भारहररा क्षिति लक्ष्मितब, लीन्ह उरसहं वास ॥

सो० । हती मूर्ति ज्यों ज्वाल, उठत चमकात न बह्नि सय ।

पासन सक रहि बाल, भृत्या आंचन सहि सबै ॥

जानि मंदोदरि निज अवधाना । पति भय हृदय तासु घबड़ाना  
 तुरत विमान विचित्र संगाई । होइ अरुह कुरुक्षेत्र सिधाई  
 तर्हो जस्य अवधान गिराई । शखेसितहिं सहि धूरि छिपाई  
 भयो न जलजग सुनिते हिकाला । बिन धनरस सब स्थि बिहाला  
 सुधाशोक वश सब जिव धारी । बिना अशन सब मरै दुखारी  
 कीन्ह शोच मन तिरझत राऊ । होय मलिल सो करिय उपाऊ  
 भूक्ति सचिव बद्ध दूत पढाये । देश देश के गराक बोलाये  
 करि सम्मान निकट बैठारे । शूद्र मञ्जुल नृप वचन उचारे  
 जानि बिकल जग कही विचारी । बर्यहिं जलद वेग सुख बारी  
 सो० । गुरागशाख्ये करजसों, बोल बिप्र समुदाय ।

देइ बारि बारि द जबै, करिये सक उपाय ॥

सो० । लागल रजत बनाय, अनिसहित कुरुक्षेत्र में ।

तहें सहि मोली जाय, बर स बारि संशय नही ॥

पपनहि जनके सुनि अयनीश । पार बाह्य नद्यो पद शीशा

रानीसहित हर्ष उर आनी । सुभिरिगजाननशम्भुभवानी  
 कीन्हपयानतुरत नरनाहा । चलयो सुभारगज्यो परवाहा  
 नृपति सोई जहं प्रजासुखारी । सहे कष्ट तिनके हित भारी  
 असबिचार करितिरङ्गत राई । गये कुसक्षेत्र क्षेत्र सुखदाई  
 तहं कर धरिहल नृप श्रीरानी । लागी जौतन महि हित पानी  
 लगत अनीहल अवति किशोरी । भई प्रकट जगमो घट फोरी  
 देखी जनक प्रीति उर छाई । लीन्ह तुरत तोहि गोद उठाई  
 हर्ष सहित नृप घर लै गयऊ । जानि कान्यासुस प्रोषित भयऊ



दो० । सिन्धुसुता श्री लक्ष्मी, पावन अमल अनूप ।  
 धर्यो जानकी नाम शुभ, जगत शिरोमणि भूष ॥  
 सो० । भो पुनीत नृप गेह, करत प्रवेशहि रत्नाके ।  
 भागविभव वैदेह, शारदशेष न कहि सकै ॥  
 नमोनमो श्रीपति रघुनायक । अगजगनाथ प्रगात सुखदायक  
 करौ अनुग्रह प्रभु सुर रञ्जन । विश्वभरत असुरनमदगज्जन  
 बालमीकि मुनि मन हर्षाई । कहत कथा अद्भुत सुखदाई  
 जब रावरा सीता लै गयऊ । बिरह दुखित रघुनायक भयऊ  
 खोजत विपिन फिरत रघुनाथा । धनुषबारा कालद्वारा साथा

पुण्ड्र अतुलबलद्विबुधसर्वो । गे गिरि निकटजहाँसुग्रीवो  
 मिल्यो तहाँ अञ्जनी कुमार । पश्यो चररातनपुलकि अपारा  
 करि अस्तुतिद्वज्जबिनय सुनाई । तुम ईश्वर त्रिभुवनसुरय दाई  
 नभभूधर महि सरित पताला । निर्यो सब तुम दीन दयाला

६० । जयजयरघुनन्दन असुरतगञ्जनजनरञ्जनश्रीकन्ता ।

सुरमुनिध्यावत ध्यानलगावत पावत आदिन अन्ता ॥

जयजयफिरपाला दीनदयाला प्रयात पालभगवन्ता ।

सर्वत्र मुकुन्दापरमागन्दा धर्म प्रद वेद भनन्ता ॥

फसिकासुयविनासीसब उरबासीशोभानिधिसुखमूला ।

त्रिभुवननाथा करी सनाथा होइ सोपर अतुकूला ॥

६१ । कर्म धर्म के रायक, तुम प्रभु कृपा निधान ।

हौ घर अघर के नायक, दीनबन्धु भगवान ॥

६२ । तुम त्रैलोकी नाथ, हौ पालक त्रैलोक्य के ।

नायक सुर मुनि माथ, चररा बन्दि कर जोरिके ॥

जयसच्चिदानन्द परधामा । अलखनिरञ्जनअगुणाअनापा

कमला कन्त अन्त सुकुन्दा । जलशायनभगवन्त गोविन्दा

पारब्रह्म अच्युत अविनासी । अजित अनादि सर्वघटबासी

परमात्मा परमेश्वर स्वामी । त्रिभुवनपति उर अन्तर्यामी

अजय अवरुड अरूप अभाया । आदि अन्ततवनिगमनपाया

भक्त बद्ध सन्तत सुरवरासी । श्रीपति पुर बेकुराठ निवासी

नरतन धरि महि भार उतारन । फिरो बिपिन सुरकाज संवारन

दयावन्त दाया कत सोपर । ज्ञानिय मोहि नाथनिजकिंकर

देवभक्ति निज पद रघुनाथा । करिय सनाथ राखि पुनि ताथा

छं० । आरति हरराशररा सुर्यदायक कृपा सिन्धु भगवान् ॥

सुरसुनिध्यात्तमर्शनपावत आदिमध्य अवसाना ॥

सन्तनहितकारी भवभयहारी गाधत वेदपुराना ।

किरपाप्रभुकीजे विनयसुनीजे दीजे भक्ति बरदाना ॥

दो० । माफत सुतघिनती सुनत, बिहँसि कह्यो भगवान् ।

होँ मैं तेरी भक्ति ते, अति प्रबन्ध हनुमान् ॥

सो० । कर अस्तुति असकोय जेसी तुमनिज सुर्यकियो ।

ताहि सदा सुख होय, सोई रहि होँ तासो मगन ॥

छं० । मनकर्मबन्ध अनुरागपुत जो नारिनरमोहिं ध्यावहीं ।

बिनयोग जपत पदानसंख्यमबासम पुरयस्यहीं ॥

सुनिवाक श्रीपति कीपवन सुत पुलकितन अति सुखले ।

कलिके विनय बज्रभाति पुनि पुनि हर्षिपद पङ्कजगहे ॥

जानि प्रभुनि जस तेहि गदि बँहू लीन्ह उठायकै ।

करितोष सुरनरनाह बज्रविधिमिल्यो करठ लगायकै ॥

दो० । राम नाम आमोल है, लगे न कर कछु दाम ।

ते नर मूढ मन्द मति, जे न भजै श्री राम ॥

सो० । हर्ष न हृदय समाय, भये मगन मनपवन सुत ।

सो सुख वररिा न जाय, लालमनी किमि कहि सकै ॥

बालमीकि मन आनंद भारी । कहत कथा हरिगुरावित्तारी

अबनि सुतापति राम कृपाला । कहापवन सुत सो सबहाला

कही कथा सब अवधवखानी । दीन्ह रामनवन जेहि विधि रानी

गाय हरिसिया आराधनधारी । खोजत ताहि किरत बनभारी

तब मारुत सुत भक्ति दृढ़ाई । सकल कथा सुप्रीय सुनाई

बालिके आस रहत गिरिजपर । करी छपा तापर करारा कर  
 कह सुग्रीव जो देखन पाजें । दारुणा विपति भैता सुभिदाजें  
 हनु राम लक्ष्मणा दोउ भाई । गयो लै गिरि पर कान्ध चढ़ाई  
 मिलि सुग्रीवहि हृदय लगाई । बालि बधन की घास बन गई  
 दो० । जानि दास प्रभु आपन, छपा सिन्धु रघु राज ।  
 बालि मारि सुग्रीवहीं, दीन्ह सिंहासन राज ॥  
 सो० । पुनि सीता के खोज, चले तुरत बन्दर कटक ।  
 उर धरि चररा सरोज, सिन्धु पार गोपवन सुत ॥

पदां सेन युत श्री रघुवीरा । पञ्जे जाय सिन्धु के तीरा  
 किरे पवन सुन लङ्का जराई । सिन्धु निकट सेना सब पाई  
 कहा सिन्धु सीलक्ष्मणा जाई । करी यत्र उतरै कटक जाई  
 दीन्ह न उत्तर जब वारीशा । क्रोधयन्त तब अयोध्या हीशा  
 परे बुदि प्रभु सिन्धु संभारी । उठी अनल तन नारिद भारी  
 भयो बारि बारिधि जर छारा । कम्बुयो काम्पित गात अपारा  
 मन्च्यो कुलाहल निय अकुलाने । जीव जन्तु लै जीव पराने



जानि प्रलय सब अये निराशा । कम्बुयो रवि शशि भि अक्षयशा  
 तब देवन प्रभु पद शिर नाई । करि अन्तु निबद्ध विन कहुनाई



दो०। नायतुम्हारी शरणा तजि, हमें न और कि आस ।

चारों अनुग्रह सिन्धु पर, पार्वे सकल सुपास ॥

सो०। शरणा सुखद प्रभु जान, आये हम सब देवता ।

करु रक्षा भगवान, चाहि चाहि आरति हरणा ॥

शोले बचन नीति युत रघुबर । कीन्ह कामलक्ष्मणा नहिं सुन्दर

नहीं उचित काहू को सतावब । बरियाई निज बल विखरावब

अस कहि कृपा सिन्धु अरणाये । बझारि इगन ते आँशु बहाये

भरा बहोरि सिन्धु जल रवारा । करत कलोल डुफूल अपारा

लखि अनुकूल राम सुर हरखे । करि उत्कर्ष सुमन बद्ध बरखे

बंधो सेतु पुनि अम्बुधि ऊपर । भये प्रसन्न देखि करुणा कर

कहा राम यह भूमि सोहावन । करिहों इहाँ शंभु आवाहन

बनी तहाँ रामेश्वर मूरति । सुदिन सुतिथि ग्रह साधि मुहूर्ति

धूप दीप नैवेद्य पुंगीफल । पान तँदुल चन्दन तुलसीदल

दो०। मृगमद कुम कुम फूल फल, औ सब तीरथ नीर ।

इजा हितहि मँगाये, सीतापति रघुवीर ॥

सो०। दिव्य आजा भगवान, लाउ खोजि द्विज वेदधर ।

चारों दिशा प्रधान, हँडि फिरे पायो नहीं ॥

कहा सन्धिव सुन दीन क्याला । है लायक क्रतु द्विज दशभाला

नहिं रावरा समको उद्दिन आला । बिप्र ज्योतिषी बेद पुराना

सौदह बिघा करतल जाके । करै कौन द्विज सर बरिताके

नहिं परिडित ऐसो जगकोई । करै यज्ञ वा सम्मुख जोई

काह्या बहोरि कोऊ मंत्रीवर । है अचरज आवब दयकाधर

करक माँझ हम कैसे सेहै । वैर मान सन्देह बढै है

बझरि सचिव पुनि मन अनुराणे । बोले बचन सत्य रस पागे  
जो रावरा आजा प्रभु वैहै । जानि कर्म शुभतुरत सो रेहै  
परम विवेकी विद्या धारी । चारों बेद शास्त्र अधिकारी  
हो० । करै स्वयं दश शीश को, पठयो दूत तहँ जाय ।

लावै ताहि बोलाय कै, करै कृत्य शिव आय ॥

सो० । प्रभु रजाय धरि शीश, चला दूत शिर नायकै ।

गयो जहाँ दश शीश, लै संदेश रघु कुल तिलक ॥

कहा संदेश रावराहि जाई । सकल कथा उपहार सुनाई  
है सामान कृत्य यहँ डेरी । चलिये आप आपकी चेरी

बिहँसा सुनत दूत सुख बानी । कहा कौन असमति अनुसानी

नहिं काररा कछु मोहिं पुलाई । आवै जनक सुता संग लाई

समझे मनहिं जानकी नाथा । गँठ बन्धन को लय है साधा

शुभ कारज कृत जे जगमाहीं । बिनपति पद दर्शन शुभ नाहीं

देखन चहत सियहि रघुराई । हैं परबश पश कछु न बसाई

सेसि तर्कना मन उपजाई । कीन्ह बहाना बाफ बनाई

पुनि कछु बेदनीति उर आनी । कीन्ह तर्क सब मनते हानी

हो० । है जो तुम्हारे यही मन, कज रावरा कुशलात ।

होई समाज के शामिल, हौं यद्यपि आपात ॥

सो० । अस कहि निशिचर नाथ, कीन्हा गमन विमान चढ़ि ।

लैके जानकि साथ, काटक माँफ प्रभु के गयो ॥

गयो राम लक्ष्मणा के आगे । बैर कपट छल प्रसभय त्याग

भयो सभा मन अबरज भारी । निकट राम रावराहिं निहारी

करि बारातामज्जु शृटु बानी । कीन्ह अरम्भ यहाँ हि ज्ञानी

निकट राम लै जनक किशोरी । निज कर गाँठ रामसँग जोरी  
 ले कर जल भूरीति हनवाई । मलयज अक्षत फूल चढ़ाई  
 कीन्ह आरती धूप जराई । धूप बात महि मराडल छाई  
 इल तुलसी फल भोग सिद्धाई । करि अर्पण नैवेद्य लगाई  
 पुनि गङ्गा जल लै अचवाया । राग पुनीफल अर्पि चढ़ाया  
 यह उग्रतीक्ष्ण बद्धन कर जाया । लिङ्ग-रामेश्वर पुनि अस्थापा  
 दो० । हृदि धिबुध बर्यै सुमन, बाजें गगन निशान ।  
 हृदय धू निरतै धिरकि, गायें मङ्गल गान ॥  
 दो० । द्विजवर परम सुजान, अन्त तसुक्त आशिय दियो ।

दो० । हुरी भगवान, जका जनक त्रिभुवन पती ॥

सुफल काज सब होयें तुम्हारे । जग जीवन जीवन रयबारे  
 हाइ है अचल राज सुखराशी । फलै कामना औ रिपु नाशी  
 सुनि अशीश सब कटक समानू । मन पुलकित हवै रघुरामू  
 कह द्विज बजरि सुख कहू बानी । बिन तसके किमि करौं बखानी  
 तनि लज्जा सखाई ज्ञानकी । है सन्मुख जग जननि जानकी  
 आयहु देत न कर ब हरेहु । रखिषे परा वेद मति सहु  
 कहा राय हृदु मधुल धानी । हठ हमारि जोतुम हठ ठानी  
 बिन हठ हूटे न तोर उधार । बिध्या ही सब परा हमार  
 हर्ष सहित तव रावरायङ्गन । गयो बजरि लै सीतहि लङ्कन  
 दो० । सेन सहित रघुवंश मरि, उत्तरे सागर पार ।

कीन्ह बधन सबराहिकर, निज शर अधम उधार ॥

दो० । दीन्ह धिभीवरा राज, तसु चरहित कर रागयतन ।

फिरे अर्ध रघुराज, लै कै जानकि सेन युत ॥

यन्दि घररा अम्बुज अथ हारी । कमलापतिपयसिन्धुबिहारी  
 धालमीकि सुनि हर्ष बढ़ाई । कहत विभवसीतासुखदाई  
 जीति लङ्का जब श्रीरघुराई । फिरे अवधसुखरहजगद्धाई  
 देव ऋषीश्वर दर्शन हेतु । आये सब जहँ रघुकुलकेतु  
 श्रीरघुनाथ हर्ष बड़ कीन्हा । करि दराड्यतशुभासनदीन्हा  
 ऋषिन प्रशंसिकबचनउचारे । तुम ईश्वर सबजगस्वपारे  
 अति प्रचराड रावरावरियारा । सुरहित लागिताहिरामारा  
 शोकबुसह दारुराभयदावा । काल फासते हमें छोड़ावा  
 सुनत राम निज बल प्रभुताई । बिहँसे तन आई अँगड़ाई  
 दो० । सुनि अनुमोदन ऋषिनसुखसियादीन्हमुसकावा ।

मारि बिप्र इक रावराहि, कौन बढ़ापन आय ॥

सो० । नहिँ उत्कार्य कि बात, ऐसे लघुताकाम की ।

कह सब ठकुर सोहात, का मनुसाई राम की ॥

सुनि बरानी सिय सुरसकुचाने । भये चकित मन याहिँसकाने  
 कारणा कौन सियासुसकानी । राम प्रशंसा सिय न सोहानी  
 अवनिसुतातबहँसिके कहेज । जन्महमार अवनिते भयज  
 भूँठ बचन कयहूँ नहिँ सोलें । विनुकारजमुखकतज्ञनखोलें  
 जबमें अपने पितु घर बासा । करत हती मन परसइलासा  
 तहँ क परित में कहोंबखानी । सुनीसकल सुरसुनिबिज्ञानी  
 आवा जनकनिकट द्विजस्की । यार्ध धर्यगुरानिपुराबिबेकी  
 काहाहमें नृप देय निवाख । कये तहां बर्षा अटतुबाख  
 अपद काल सीहीउ सहार्ई । तुहँ उचित नृपद्विजसेवकाई  
 दो० । दीह बास नृप निजभवन, पायो द्विजविश्राम ।

पठवा देइ रजाय सोहिं, नित प्रति सेवाकाम॥

सो०। पायो सुख सामान, दिज निज आसन डासिके।

लग्यो करन जप ध्यान, उपदा जोरि में लावती ॥

नित पूजन हित चौका देऊं । पुष्य सुगन्धित चुनि धरि देऊं

करि पूजा नैवेद्य जो पावै । कथा विचित्र अनूप सुनवै

कहा एक दिन विप्र पुनीता । अचरज एक सुनो तुम सीता

सप्त सिन्धु जे परगट अहई । तामें एक उदधि दधि कहई

ताके पार बसत एक द्वीपा । विदित नाम तेहि ह्वांकर दीपा

विपिन सघन अति उतंग पहार । तहें ऋषि मुनि के ग्राम अपार

बसत उहाँ इक नगर अनूपा । तेहि नगरी महँ खरा भूपा

रतुज प्रचराह समुष्य अहारी । करिन सकत बधको उधनु भारी

बज्ररि जानकी सब विधि हेरी । कहति कथा उत्पति तित केरी

सो०। जहाँ करत पुलस्त्य मुनि, तप नित धरि हरि ध्यान।

कन्या भूरा विर नृपति की, आवै तोहि अस्थान ॥

सो०। गाव बजाय निशान, और सखिन को साथ लै ।

होय जाय जप हान, परत भनक स्वर के अवरान ॥

मुनि करि कोप दीन्ह तब शापा । जो आवै खराडन सम जापा

रहे गर्भ विन सनसथ पाये । कहि अस मुनि पुनि ध्यान लगाये

गइ जय अयने भयन कुमारी । गर्भ पितहि लरि भौडु खभारी

कीन्ह विचार बज्ररि सनसाहीं । कहा दोष कन्धे कहु नाहीं

सो कन्या पुलस्त्य कहँ दीन्हि । हर्ष सहित मुनि कर गहि लीन्हि

भेवि अवा सुनइ सुनइ ताके । कर्म धर्म गुरा सुन्दर जाके

भरहाज मुनि शुभ गति देखी । दिख कन्या निज हर्ष विशोखी

तासों भे कुबेर दातारा । धर्म धुरीणा धनेश उदार  
लाखिके तप अजभयेसुखारी । कक्षा मांगु वर पुत्र विचारी  
हो०। कह कुबेर कर जोरि कर, सुनिये अग जगनाथ।

देऊ एक वर यह सदा, रहे लक्ष्मी हाथ ॥

सो०। तब विरंचि शुभ बानि, सब मस्तु कहि हर्ष युत।

दीछ्यों चक्ररि बिमान, चढ़ि कुबेर गोपितु सदन ॥

कह अभिलाष एक मन माहीं । धनकी मोहिं इच्छा कछु नाहीं  
नहिं अस्थान नहीं कङ्केशामा । करौ जाव मैं तहं विश्रामा  
कह त्रिकूट पर्वत के ऊपर । गढ़ अट्ट लङ्कन बस तापर  
विशुकर्मा निज हाथ बनाई । सुरन निवास कीन्ह तहं जाई  
भये दनुज जग बिकट कुचाली । सालवन्त सालीय सुमाली  
कीन्ह उपद्रव तीनों भाई । लीन्ह सुरन ते लङ्क छोड़ाई  
भयो विश्व उर वारुरा कोपा । मारि तिनहिं ररा कीन्ह अलोपा  
सो तुम करौ जाय तहं बाध । सुख सम्यति युत भोग बिलास  
भे कुबेर पितु आजा पाई । रहे जाय पुनि लङ्क बसाई  
हो०। करत संयत श्री विष्णुके, बच्यो सुमाली भाग।

बास कुबेर सुनत तेहि, बज्रत हृदय दुरवसाग ॥

सो०। अस कछु करिय उपाय, लीजे धनदते छीनगड।

मन अति तर्क बढ़ाय, लगे करन रचना सोई ॥

नाम केकसी ताके कन्या । कीन्ह विश्रवा की सो धन्या  
जाते जा सुत उत्पति होई । होइ हे सम कुबेर के सोई  
कह कन्या सों मुनि हर्वाई । का अभिलाष सो कही बुभाई  
बोली केकशी तब कर जोरे । बड़े वंश तुम से मुनि सोरे

कह कुसमय मांगा बरदाना । होइहै सुत राक्षस ब्रह्मवाना  
 बोलिकेकशी दुख युत धानी । है अचरज मुनि तुम जो बरवानी  
 तुम पति मुनि में तुम्हरी जोई । तिनसों उतपति राक्षस होई  
 कह मुनि जो सुत पाछे होई । भक्त शिरोमणि हरि का सोई  
 अस कहिहर्षत्रियहि गहिलयज । करिबिलास पुनिरतितेहि दयज  
 दो० । आदि जन्म रावरा पुनि, कुम्भ कररा बलघन्त ।

शूर्पराखा कन्या भई, बहुरि विभीषरा सन्त ॥

सो० । श्रवरा नपन भुजधीस, दश आनन रावरा सुभट ।

कीन्ह अष्टविनहति खीस, जग परितापी सुरन रिपु ॥

एक दिवस की सुनु यह चाता । गये कुबेर भवन संग माता  
 दीन्ह केकसी ताहि कनेधी । है कुबेर तुम आत बिशेधी  
 विभव कुबेर दीव जय रावन । दाह अनल उपजीतन तावन  
 कह लैहो मोहूं बरदाना । तप बल विभव कुबेर समाना  
 कहि अस चला सहित दोउ भाई । निकट गोकररानाभ के जाई  
 कीन्ह तपस्या तीर्थी भ्राता । कथा समस्त जगत् विख्याता  
 लहि बरदान घडरिजब आवा । बचन सुभासी ताहि सुनावा  
 है यह लङ्का पुरी हमारी । दीन्ह देवतन हमें निकारी  
 लेइ कुबेर सों बेगि छोड़ाई । करौ तात सेइ यान् उपार्द  
 दो० । बिहंसि कहा रावरा तब, है कुबेर मम भ्रात ।

उचित मोहिं तासों नही, करब बैर उतपात ॥

सो० । कह कश्यप के बंश, सुर औ असुरज आदि सब ।

बैर भाव को इंश, एक एक को मारहीं ॥

बहुरि सुभासी तर्क बढ़ाई । वाहा विजय करि लेइ बढ़ाई

लेइ फटक रावरा तहँ धावा । पुनि पाछे ते दूत पढावा  
जाय कहा रावरा प्रभुताई । देऊ लंक की लेऊ लडाई  
तब कुबेर मन कीन्ह बिचारा । है यह माल सु भ्रात हमारा  
गह लङ्ग तब त्यागन कीन्हा । जाके लास बास तहँ लीन्हा  
पुनि रावरा पितु आज्ञा मानी । कीन्ह जाय लङ्ग रजधानी  
खाय ऋषिन ऋषिबाग उकारा । त्यहि हित राम समरतेहिं मारा  
सुनौ शरित उद्धव साहिरावरा । जनन्यो केकसि यक संग रावरा  
भयो बली अतिकहिनाहिं जाई । सारा सारा अकड़ तनन समाई  
रो० । खेलत खेल बाल पन, रबि शशि गेद समान ।

सापत रथेचे गगन ते, सुरपति रहत सकान ॥

सो० । ऐसो भट बलवान, दीन्ह हिलाई रागन को ।

दुर जहँ तहाँ परान, भये बिकल सब देवता ॥

बाँधि सुरन रजु आस दिखाये । पकड़ि पाँच पुनि महि प्रसिलाये  
आवा इन्द्रलोक इफबारा । सब देवन को जाय निकारा  
इन्द्रासन पर बैठ्यो जाई । राक्षस दैत्य युलाय बसाई  
भये देव सब निपट निरासा । गिरि कन्दर महँ लीन्ह नियासा  
कहति सिया मृषु बचन बहोरी । बैठि सभा सम्पुरव ऋषि श्रोरी  
का बपुरा दश शीशक रावन । बध्यो राम लाग्यो यथा गावन  
सहस शीशकोहे सहिरावन । सुर देवी ऋषि मनुज सतावन  
ताको बधन करे जो कोई । पावन सुयश युगान युग होई  
सुनी राम जब सिय सुख बानी । गये सहनि मन भई गलानी  
रो० । भये सरुब श्री राम तब, कह्यो सुमन्त्र बोलाय ।

करु इकठोरी अवध दल, हय गय साज बनाव ॥



सो०। पठवा लङ्क संदेश, आव बिभीषणा सेन पुत ।  
चलै संग अवधेरा, रिपुदल जीतनके लिये ॥

पठवा पम्पापुर एक भावन । चमू सहित सुग्रीवहि लावन  
लङ्कनपति सुग्रीव कपीशा । आय राम पद नाये शीशा  
पाय रजाय सु आशा कारी । निज निज दल सब साज संपारी  
पहिरि फिलामिली धरि शिर खोता । भे सुभटन के मन अति मोदा  
बोंधि धनुष तोमर किरपाना । गदा गुर्ज सुझर धरि घाना  
नाय माय ठाढ़े प्रभु आगे । निरखि सुभट प्रभु मन अनुरगे  
बड़े बिमान जानकी नाथा । लै दल कपि निशिचर सिप सभा  
करि पयान श्रीपति रघु राई । पङ्कचे देश शत्रु के जाई  
रघु रजि जबहिं महिरावरा पाई । कोहू बाहिनी अवध चढाई  
दो०। लाग कथन मनहीं मन, फा बापुरा पुमान ।

करै जो सन्मुख मोरे, समर भूमि कल्यान ॥

सो०। कह विधि सके बार, भे प्रसन्न निश्चर सबै ।  
घर बैठे आहार, बिन अस दीन्ह्यो लायकै ॥

कहा बहोरि तर्क उपराजी । कीश भालु मानुष हमर खाजी  
नहिं कछु मोहिं अवश्य पृताना । चाहिय सहायक धनु अरु बाना  
अस कहि सन्मुख ररा के आया । पवन बारा तहें सपदि चलावा  
गयो कटक जहें तहें सरा माहीं । जिमि मारुत संग मेघ उड़ाहीं  
भूप बिभीषणा सहित सहाई । गिरयो तुरत लंका पर जाई  
कटक भालु कपिर रात उड़ाई । गिर पम्पापुर मनहिं लजाई  
धजिनी अवध अवध पुर गयउ । सबल सुभट मनहीं मन कहाउ  
जोरता जमि कर होत लड़ाई । लड़ते हमहूं बलहि दिखाई

मरते ताहि कृपारा उपाटी । लेते शिर कराटक कर काटी

सो० । करत प्रहार नपलभर, वह धोखे का तीर ।

तौरा ताहि बधनकर, लेते जग यशवीर ॥

सो० । कीन्ह जो छल सों घात, नीति रीति सों बूर है ।

है अनीति की बात, दै धोखा लड़िबो समर ॥

लख्यो राम जब शत्रु कुचाली । भयो क्रोध आर्ये भई लाली

कीन्ह राजाय अवध कटकाई । चले लड़े फिरि साज बनाई

सेन सहित पुनि नृपति विभीक्ष्ण । आये अवध पाय धर सीखन

सै दक्ष कपि सुग्रीव कपिन्दा । अटे अवध जहँर घुफुल चन्दा

जामवन्त निज सेन बढोरी । आय राम सन्मुख कर जोरी

करि बिचार बडरि डर घुराई । चार अनी कटकाई बनाई

हरबल भरथहि कीन्ह शत्रुहरा । अनीपतिन पर भे पुनि लक्ष्मणा

बाजे विषुल निशान मुक्ताज । सुनि सुभटन मन उपगत बाज

बला कटक जैसे जल धारा । उतरा जाय सिन्धु के पारा

सो० । कहत शूरमा परसपर, लड़िये अब दिलाखोल ।

करिये चोट शत्रु पर, चढ़े दिशिते करि डोल ॥

सो० । धरिय संभरि के पाँव, हिलन हिलाये कोटिविधि ।

खेलिय धरि के दाँव, समर भूमि वह शत्रु ते ॥

महिरावसाकरि क्रोध अपारा । पुनिरा सन्मुख तीर पैवारा

लागत भरक तीर कटकाई । कोसों उड़े न धूरि दरियाई

गे निज भवन कपीश विभीषण । अवध भरथ लक्ष्मणा शत्रुहन

जामवन्त नल नील समेता । मे उड़ाय सब अवनिकेता

समर भूमि को उरहान ठाढ़ा । अतिशय रोष राम उर बाढ़ा

कारि श्रेयं बधन अवशिर्भैवोही । बद्धत वचा अबलों सुरद्रोही  
 बहुरि राम की पाय रजाई । आबा बहुरि कटक समुदाई  
 आपङ्गचे सहि रावरा देखू । बाँधि कोट ररा कीन्ह प्रदेसू  
 होनहार नहिं मिटै मिटाये । फविकोयिद निगमागन घाये  
 दो० । जबै राम मन कोप करि, खैचो विशिख इष्वास ।

काँपे दिनगज नही धर, क्षिति यताल आकास ॥

सो० । भयो कोलाहल घोर, धर धर काँपति खट्टि सब ।

खुनि महिरावरा शोर, निज दल लीन्ह हँकारि तब ॥

दीन्ह रजाय सु सुभट बोलाई । चलो बेगि ररा करौ लड़ाई  
 मनुज भालु रजनीचर बन्दर । आये बहि अशंकपुर अन्दर  
 अवन कोउ ररा रहब भुरवरी । मनुज भालु कपि खाजि हसारी  
 खाब धरौ नहि मारि पछारौ । शूलगदा अस्ति शीर पर वारै  
 अड्ड हास करि सैन चलाया । आप राम के सन्मुख आवा  
 अवधलङ्ग दल दोउयक साबा । सहित विभीषरा औ सियनाया  
 कीश भालु दल दाहिन बाँये । चलरि पुसमुख फवम उठाये  
 गोकपि भालु असुर दल पेली । काटै दाँतन देईं हकेली  
 सुभट तनीचर पुनि उठि धारै । कीश बली महियारि गिरावै  
 दो० । तब सकोपि सहिरावरा, घाले सि तीर समीर ।

चले उड़ाई जीव लै, हय गय दल सब धीर ॥

सो० । गे उड़ि निज निज धान, हनुमान सिचर सतजि ।

रहान कोउ संग्राम, सतज छोड़ि जो बद्धत ररा ॥

चला तमकि के पुनि महिरावन । रगाजि निशोरित रूप भयावन  
 का कहिये तेहि रय कि बड़ाई । अति उतङ्ग रवि चन्द्र छिपाई

तब मारुत घुत कीन्ह उपाई । रथते द्विगुरिगत चरणावढाई  
 वीरघ रूप धरयो हनुमाना । ऊर्ध्वबाहु करलीन्ह विमाना  
 तापर राजत श्री रघुसाई । लीन्ह पुष्य समशीश उठाई  
 तपर घुनाय अनल शरभारा । शत्रु कटक सब भाजरि छारा  
 बद्ध राक्षस लै जीय पराने । बद्धत भागि गिरिखेह समाने  
 यज्ञतक रुराड सुराड बिनु लोटै । तापर काका गीध की चोटै  
 देखि दशारिभुभयो मलीना । तीर कामान क्रोध करि लीना  
 दो० । मारुतीर संभारि कै, खैंचि अवराल गितान ।

आय परा छाती उपर, भे भूर्च्छित भगवान ॥

सो० । लखि भूर्च्छित श्री राम, भयो शोकदासरा सुरान ।

पुष्यक पर विश्राम, करत भये रघुकुलातिलक ॥

हर्ष विषाद न सिय उरझानी । बैठी जैन साधि सहरानी  
 तनक नहीं मुखयाहिं उचासी । आदि शक्ति निर्गुरी सुखरासी  
 ऋषि मुनि सुर सब शोर मचावा । कह पुरख बेभ न उठे उदावा  
 बुखित देखि सुर मुनि समुदाई । हंसी उठाय सिया हरसाई  
 लीन्ह रूप धरि सिय सहकाली । इह देव मन दीन दयाली  
 परी शिरोध शिरन कीमाला । भुजा चरि बल अतुल विशाला  
 घरसा उलङ्ग भपट प्रलयासी । जीह अरुरा मुख बहिर निकसी  
 पात्रा मूल किरपारा कापाला । शोभित पर शिर केश फराला  
 भौंह बद्ध आपद्ध सुरङ्गी । पलक चक्र चितयन तिसङ्गी  
 दो० । किय उत्पन्नाहि अङ्गने, शक्ती अमित कराल ।

रूप भयंकर देखि कै, काँप्यो स्वर्ग पताल ॥

सो० । कोड कवि सकें न गाथ, रूप श्याम जगदम्बको ।

अद्भुतकलाविश्याद्य, कीन्हचरितपावनविमल ॥

आदिज्योतिभगपति महमार्व । तासुचरितमुनिये मन लाई  
कीन्हकटकरीपुकेययभार । लक्ष्मीमर्दन अस्त्रपंवार  
भारिखड्गुरिपुदलसबकाटा । परैनधरिारुधिरसबचाटा  
शत्रुबाहिनीकरिसंहार । पुनिसकोपिमहिरावराभार  
लखिकौतुकनभसुरअनुरागे । बर्षिसुमनयशगावनलागे  
करिअस्तुतिबोलेमृदुबानी । अबनिजरूपपलामुमहरानी  
जबैसुरनबड्गबिनयमुनाई । धर्यो रूपनिजसियहर्षाई  
मईलुप्तशक्तीसम्प्रासाहीं । सियारूपलखिसुरहर्षाहीं  
जयजयकहिमृदुबचनउचारे । सुरहिततुमसुररिपुसामारे  
हो० कीन्हीकृपासुरनपर, दारुणशोफमिठाय ।

करियप्रशंसाकौनतुय, गतिचरणीनहिंजाय ॥

सो० अजपरस्योनिजहाथ, सन्मुखसबकेरामउर ।

गइमुच्छासियनाथ, हैउठबैठविमानते ॥



शिवविरंचिसनकादिमुनीश । आयरामदिगईन्हअशीशा  
तंबकमलजसबकथाबरवानी । जेहिविधिकीन्हविजयमहरानी  
विहंसिजानकीकहसुरओरी । हैविचित्रअद्भुतगतिमोरी

जो न प्रकट फरती प्रभुताई । तौ किमि जनत्यो मम मनुसाई  
 कोटि भांति सुरपत्न लगावैं । तब हूं मोर मर्म नहिं पावैं  
 होयें गगन जो लारवों भानू । मोरे सन्मुख रेणु समानू  
 अस कहि चमकविचित्रदिखाई । बद्धरिदमकि नभसाहिं समाई  
 तबरघुनाथ जोरियुग हाथा । करि दराडवत नवायो माथा  
 विविधभांति अनुमोदनकीन्हा । पुनिसियरूपसियाधरिलीन्हा  
 सो॥ हाथ जोरि शिरनायकैं, विदा देवता भोगी ।

चले प्रशंसा करत मन, उमंगि उमंगि अनुसंगी ॥

सो॥ गे सुर निज निज धाम, दै अशीश अन्तरहिये।

आय अग्रध श्री राम, सहित जानकी पवनसुत ॥

बेढि सिंहासन सिय रघुराई । देवन सुमनदृष्टि भरि लाई  
 जयजयजयधुनि त्रिभुवनछाई । कीन्ह सुरन पुनि अस्तुति आई  
 बोले बालमीकि तप धारी । भरद्वाज सुनु बिनय हमारी  
 कथा अखिल सैं तुमसोंगई । हरिगति अद्भुत कहिन सिराई  
 भगवत चरित अनन्त अपारा । कहि कविकोबिद पावनपारा  
 भरद्वाज सुनि सुनि वर यानी । भक्ति बिबेक प्रेम रस सानी  
 बालमीकि सन्मुख करजोरी । कह का करीं प्रशंसा तोरी  
 सुनि हरि कथा अमीरस बोरी । भई तृपित तिरिया सब मोरी  
 पुलकि शरीर हर्ष उरलाई । गेनिज भवन सुनिहिं शिरताई  
 सो॥ करि अस्तुति सब देवगण, गमने निज निज धाम।

राजत राज सिंहासन, सहित जानकी राम ॥

सो॥ बालमीकि करजोरी, करत बिनय करुणायतन ।

कत रक्षा अन्न जोरि, आहि जाहि आरति हरत ॥

भक्त्यनुसार सुकृत कवि ज्ञानी । शुराबाद हरि करै बखानी  
 भक्ति सो बहू रको म्बहिं नाही । सत्य कहैं लिखि कागद माही  
 जो शुरापावक है मोहिं कोई । नहिं जानत अनजानत सोई  
 पुरान रहित सब कबि कृति मोरी । कायर गर्व करै मति भोरी  
 भाषा भाषात एक नहिं मोरे । छन्द प्रबन्ध न जानौं भोरे  
 उई प्रति से भाषा गाई । जानि सनेह राम सुर्यदाई  
 फेवल यहि सहै नास अधार । कहै तरे भवसिन्धु अपार  
 हैं हरि भक्त जो कहै सुनाई । जुनै सो सुजन अषरा चितलाई  
 तिन सबसों या बिनय हमारी । होइ चूक तो लेउ सुधारी  
 दो० । लालमनी सब तर्क तजि, भजिले सीताराम ।  
 करिहैं पूरे मनोरथहि, निशि दिन आठौं याम ॥  
 सो० । छोड़ि कपट सर मोह, काम क्रोध शेर रज ।  
 कतइन सबसों श्रेष्ठ, लालमनी सिधराम भजु ।  
 दो० । जिमि बियथी रुचिकामिनी, तिमि जे हरि पद होय ।  
 जाय चलो सुरधानको, मग नहिं रोके कोय ॥  
 इति श्री अद्भुतरामायण लालमरिा विरचितं  
 समाप्तम् ॥

